॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

दिसम्बर 2017 वर्ष 20, अंक 12
विक्रमी सम्वत् 2074
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

दान का प्रतीक है सहिष्णुता और सत्कर्म

❐ कृष्णा मोहन गोयल

देश, काल और पात्र को देखकर जो दान ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है जिससे बदले में कुछ भी उपकार की आशा न हो, उस दान को सात्त्विक दान कहते हैं। जो दान प्रत्युपकार के लिए या फल को ध्यान में रखकर दिया जाता है या जिसे देने में कष्ट होता है उसे राजसिक दान कहा जाता है। जो दान देश और काल का ध्यान रखे बिना अपात्र व्यक्ति को दिया जाता है या जिसके देने में तिरस्कार और निरादर का भाव होता है उस दान को तामसिक दान कहा जाता है। ऐसा योगीराज श्रीकृष्ण ने दान के विषय में गीता में बताया है।

वास्तव में वे लोग धन्य हैं जो संसार में सत्मार्ग पर चलकर सबकों अपने श्रेष्ठ कार्यो से सुख पहुंचाते हैं। इसके विपरीत वे लोग इनके विरूद्ध आचरण के स्वार्थी एवं दयाहीन होकर संसार को हानि पहुंचाते हैं। हमारे ऋषियों ने कहा है कि एक ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनसे मिलने पर दुख ही प्राप्त होता है एक वे भी हैं जिनसे मिलने के बाद बिछुड़ने पर दु:ख होता है। संसार में वे व्यक्ति पूजनीय एवं अमर हो जाते हैं जो अपनी हानि को ध्यान में न रखते हुए सबके हित के लिए अपना सर्वस्व दान कर देते हैं। जिनमें महर्षि दयानन्द दयानन्द सरस्वती, स्वामी दयानन्द, महाराज हरिश्चन्द्र, धनश्यामदास बिरला, महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आदि हैं।

महर्षि दधिचि ने परोपकार हेतु अपनी अस्थियां दान में दी थी, महाराज कर्ण सूर्योदय से सूर्यास्त तक स्वर्ण का दान किया करते थे। इसके अतिरिक्त उनसे जो भी जो कुछ भी मांगने आ जाता था वह उससे बिना किसी आशा के उसे तुरन्त ही दान में दे दिया करते थे। महाराज हरिश्चन्द्र ने महाराज विश्वामित्र को दानस्वरूप अपना सम्पूर्ण राज्य दान कर दिया था और उनकी दक्षिणा हेतु अपनी पत्नी और पुत्र को किसी व्यापारी को तथा स्वयं को एक डोम को दान में दे दिया था। आधुनिक समय में धनश्यामदास बिरला भारतवर्ष के सम्मानित प्रसिद्ध उद्योगपतियों में से थे जिनके द्वारा स्थापित किये गये भारतवर्ष तथा विदेशों में अनेक धार्मिक संस्थान एवं शिक्षा मन्दिर संचालित हैं। इसी प्रकार महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) द्वारा स्थापित भारतवर्ष एवं विदेशों में अनेक आर्य समाज मन्दिर एवं धार्मिक संस्थान चलाये जा रहे हैं। विशेष कर केरल एवं भारतवर्ष प्रदेशों में इसादत को मुंह तोड जवाब दिया है।

विश्व के सबसे प्रमुख युवा उद्यमी 'बिलगेट्स' ने अपनी सम्पत्ति का आधा भाग निराश्रितों के हित के लिए समर्पित करके दान शब्द की नई परिभाषा लिख दी है। इन्हीं के समान ही अमेरिका में एक बहुत प्रसिद्ध धनपति व्यवसायी एवं उद्योगपति है जिसका नाम है वारेल वफेट जिसने असहायों के हित के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया है। वर्तमान में मुंजाल परिवार (हीरो समुह) ने कई गुरुकुलों को नया एवं बंद पड़े गुरुकुलों को पून: जीवित कर अतुलनीय कार्य किया। विशेषकर स्व. महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल एवं स्व. श्री बृज मोहन लाल जी मुंजाल परिवार विशेष सहमन्त्री रहे। कन्या गुरुकुल लुधियाना एवं टंकारा गुरुकुला वर्तमान में जीता जागता उदाहरण है।

इसी प्रकार एमेटी यूनिवर्सिटी के संस्थापक डॉ. अशोक कुमार चौहान ने अपने पूर्वजों दादा स्वामी ऋतानन्द जी महाराज एवम् पिता वैदिक विद्वान, श्री बलजीत शास्त्री (मेरठ) एवं विदुषी माता श्रीमती वेदवत्ति के सुपुत्र होने का सामाजिक ऋण उतारते हुये बिना किसी लाभ नुकसान के शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी योगदान दिया। पूरे भारत में महाविद्यालयों का जाल बिछा दिया एवं धर्मपत्नी डॉ. अमिता चौहान जी ने अन्तर्राष्ट्रीय विद्यालयों की अध्यक्षा होते हुए वैदिक मान्याओं से ओत-प्रोत संस्थाएं खोली, ऐसे सभी दानी महानुभाव साधुवाद के पात्र है।

लंका का राजा रावण त्रेगा युग का महान दानी और शिवभक्त था परन्तु सत्कर्म के अभाव में असहिष्णु हो गया था। दान के सम्बन्ध में विभिन्न कहावतें भी जुड़ी हुई हैं जैसे 'नेकी कर, दरिया में डाल' 'इकट्ठे कर लो चाहते जितने हीरे मोती, पर याद रखना कि कफन में जेब नहीं होती हैं,'' ''तन की शुद्धता स्नान से, नाम की शुद्धता दान से,'' ''मन की शुद्धता ध्यान से होती है,'' ''चिड़ियों ने जब चुग खेत'' लिया फिर पछताये क्या होवत है।

सदियों पूर्व से सत्कर्म वाले व्यक्ति मार्गो पर छायादार वृक्ष लगाया करते थे जिनसे चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखायी देती थी।

(शेष पृष्ठ 17 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्य समाज हिसार की ओर से सम्पूर्ण हरियाणा स्तर पर

पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी का अभिनन्दन

आर्य समाज हिसार एवं की शिक्षण संस्थाएं प्रादेशिक और डी.ए.वी. को समर्पित करने का संकल्प

आज सद्भाव एवम् संगच्छवंद..... भावना की आवश्यकता है- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

आर्य समाज हिसार और डी.ए.वी. ने नया इतिहास रचा- श्री हरि सिंह सैनी

आर्य समाज, लाजपत राय चौक, हिसार (हरियाणा) का पांच दिवसीय 131वाँ वार्षिक समारोह डी.ए.वी.हाई स्कूल के मैदान में भव्यता के साथ सम्पन्न हो गया। 4 नवम्बर को डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. पूनम सूरी मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में पधारे तथा उनका आर्य समाज डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं व जिलाभर के आर्यजनों ने स्वागत एवं अभिनन्दन किया। 3 नवम्बर को ऐतिहासिक शोभा यात्रा निकाली गई जो अत्यन्त प्रभावशाली रही।

इस अवसर पर रोहतक, भिवानी, जीन्द, सिरसा, फतेहाबाद, हांसी एवं हिसार जिले की विभिन्न आर्य समाजों से सैकड़ो आर्यजन सम्मेलन में सम्मिलित हुए।

डी.ए.वी. स्कूल हिसार के प्रागण में पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी का अभिनन्दन समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। इस अवसर पर लगभग पूरे उत्तर भारत से आर्य समाज एवम् डी.ए.वी. के पदाधिकारी एवम् जनसमूह उपस्थित था। अतिअनुशासित इस कार्यक्रम की भव्यता देखते ही बनती थी।

समारोह से पूर्व डॉ. सूरी सपत्नीक यज्ञ पर उपस्थित हुए जिसमें डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के महामन्त्री श्री आर.एस. शर्मा, उपप्रधान श्री रमेश आर्या जी, अम्बाला से पधारे श्री राजेन्द्र नाथ एवं श्री हरिसिंह सैनी आदि प्रमुख थे। डॉ. पूनम सूरी की यज्ञ के प्रति अपार श्रद्धा जगजाहिर है यज्ञवेदी पर आंखे बंद कर आनन्दित थे। उपस्थित जनसमूह में इस बात की विशेष चर्चा थी की ऐसे होते हैं सच्चे संस्कारी आर्य पुत्र। आनन्द स्वामी जी महाराज के पौत्र से इसी प्रकार की ही आशा की जाती है।

(शेष पृष्ठ 19 पर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा)

की वार्षिक प्रचार सामग्री का लोकापर्ण करते पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी

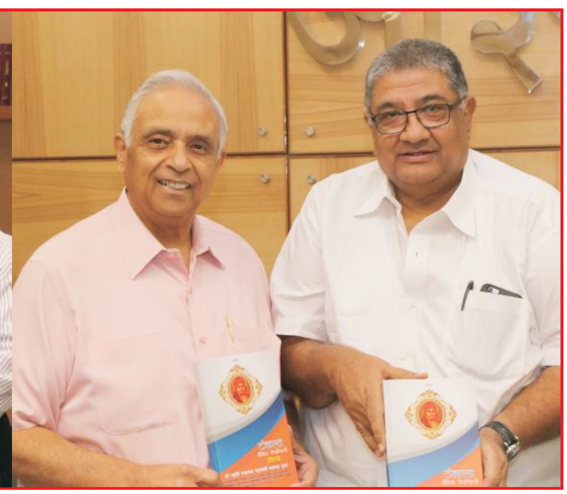

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) की वार्षिक प्रचार सामग्री का लोकापर्ण करते डॉ. पूनम सूरी साथ में श्री एस.के. शर्मा, डॉयरेक्टर डी.ए.वी. पब्लिकेशन, प्रशासनिक डॉयरेक्टर डी.ए.वी. सी.एम.सी., उपप्रधान श्री राजेन्द्र नाथ, डॉयरेक्टर स्कूल्स श्री जे.पी. शूर जी एवम् अजय सम्पादक टंकारा समाचार

आशा की किरण अभी बाकी है

जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने व्यवस्था को बनाये रखने के लिए आश्रमों के सुचारू रूप से चलाने हेतु राजा-प्रजा, गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र, पति-पत्नी, तथा बहन-भाई में परस्पर स्नेह सहित वात्सल्य, प्रेम, संसार के नियम निर्धारित किये थे, वैसे ही मानव हृदय में ईश्वर भाव, आस्तिकता, प्रभुभक्ति एवं संगठनात्मक शक्ति का विकास करने के और सभा, सोसायटी, समाज, एकीकरण, सत्संग आदि सामुदायिकता को प्रेरित करने वाले नियमों को भी निश्चित किया। उनका ऐसा करने के पीछे नि:संदेह मनुष्य के उस प्राकृतिक भाव को विकसित करना रहा होगा जिसे आदिकाल से मनुष्य सभ्यता के साथ जोड़ा जाता रहा है। मनुष्य कभी अकेला नहीं रहा वह हमेशा मिलकर समुदाय में संगठित रूप से ही रहा। उसकी इसी प्राकृतिक प्रवृत्ति का नतीजा है कि गांव बसे, शहर बसे और व्यवस्थायें बनीं, पंचायत, विधान सभा एवं सांसद आदि का विकास हुआ। कुछ मनुष्य सेवा अथवा व्यवस्था सम्भालने की ओर हुये और कुछ उन सेवाओं का भोग करने हेतु। समय के साथ-साथ विपक्ष का भी विकास हुआ व्यवस्थाओं को सुधारने हेतु न कि नकारात्मक कटाक्ष अथवा मर्यादाओं को भंग करने हेतु।

समय के साथ सभी कुछ विकसित हुआ नकारात्मक सोच का भी विकास हुआ जिससे सकारात्मक सोच का विकास कम होने लगा या ऐसा कहे कि नकारात्मक सोच के विकास से सकारात्मक सोच का विकास कम हुआ। सकारात्मक सोच के परिणाम हेतु धैर्य अधिक चाहिए। नकारात्मक सोच के परिणाम शीघ्र उपलब्ध है। इस प्रवृत्ति का विकास इस कारण भी अधिक रहा।

उपरोक्त नकारात्मकता, पक्ष-विपक्ष, पद-लोलुपता, स्वार्थ आदि भावनाओं का जहां सभी स्थान प्रसार हुआ नि:संदेह उपरोक्त भावनाओं का आगमन आर्य समाज जैसी संस्था में भी हुआ।

ऋषि के स्थापित आर्य समाज के पुनरोदय और उसमें नवीन स्फूर्ति और जागृति उत्पन्न करने हेतु इस आशा से कुछ विचार परामर्श और अपने हृदय के उद्‌गार प्रस्तुत करना चाहता हूं, कि जो अग्नि मेरे हृदय में धधक रही है उसकी एक चिंगारी से किसी सहृदय पाठक के हृदय में भी वह गर्मी और तेज उत्पन्न कर सकूं-मीरा के शब्दों में-

हे री मैं तो दरस दिवानी, मेरा दर्द न जाने कोय।
दर्द की मारी वन-वन डोलूं, वैद्य मिला ना कोय॥

मेरे हृदय की पीड़ा तभी शांति होगी जब कोई दयानन्द सा वैद्य फिर इस आर्य राष्ट्र के रोग का निदान कर इसकी चिकित्सा करेगा।

आर्य समाज का संगठन-आर्य समाज का संगठन आज शिथिल पड़ चुका है। कोई भी सभा को राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रचार सभायें हो अथवा कोई आर्य शिक्षण संस्था, सभी किसी कुशल खेवट के बिना जैसी नैया के समान बहती जा रही हैं। नदी के प्रवाह के साथ स्वत: ही बहती जा रही है। आज नदी का प्रवाह पश्चिमी सभ्याता की ओर बढ़ता जा रहा है। टेलीविजन के माध्यम से आई ईस्ट इंडिया कम्पनी का मुंहतोड़ जवाब देने वाला आर्य समाज आज नहीं हैं। अगर अभी से इस पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव को न रोका गया तो आने वाले सालों में हमारी सांस्कृतिक सभ्यता ही खत्म हो जायेगी। विशाल देश की जो आज हालत हो गई है उसकी इस हालत के लिए किसी हद तक यह पश्चिमी सभ्यता से ओतप्रोत टी.वी. कार्यक्रम ही है।

आर्य समाज की इस नैया का पतवार पकड़ने वाला कोई कर्णधार आज दिखाई नहीं देता। **आज मेरी आंखें किसी श्रद्धानन्द, हंसराज, गुरुदत्त, पं. लेखराम, महात्मा आनन्द स्वामी को ढूंढ़ती हैं** जो आर्य समाज के मतवाले इस ज्योति की ज्वाला के दिवाने पतंगे थे। आज उठते बैठते, सोते-जागते हर समय आर्य समाज का ही चिन्तन मनन और प्रसारण करने वाले दिखाई नहीं देते। आर्य समाज के मंदिर, अनेक आश्रम, स्कूल, कॉलेजों के भव्य भवन मौजूद हैं परन्तु उनमें किसी तपस्वी की आत्मा का निवास नहीं। स्टीम इंजन के बिना रेल के डिब्बे खड़े हैं। (प्रयास हो रहे हैं लेकिन प्रभावी नहीं है) इसमें विद्युत शक्ति को प्रवाहित करने वाले तेजस्वी नेता की जरूरत है।

मैं निराशावादी नहीं हूं। परम आशावादी हूं। निराशा को मार भगाने का पक्षपाती हूं परन्तु ऐसा मूर्ख आत्मसंतोषी भी नहीं कि वस्तुस्थिति से अपनी आंखें मोड़ लूं। आर्य समाज के बड़े-बूढ़े नेता एक-एक कर हमसे पृथक हो रहे हैं। जो थोड़े बहुत जीवित हैं वह परलोक की यात्रा की ओर अग्रसर हैं अथवा वर्तमान में आर्य समाज में बढ़ती राजनीति एवं गुटबाजी को देखते हुए स्वयं तक ही सीमित रहने में अधिक उचित समझते हैं और यह वह व्यक्ति हैं जो दोनों समय दैनिक हवन तथा आर्य मर्यादाओं से ओत-प्रोत हैं व जिन्हें वर्तमान में हम गर्व से वैदिक परिवार के सदस्य कह सकते हैं।

आज कोई भी नौजवान जो आर्य समाज की पूर्ण मान्यताओं से रंगा हुआ हो सेवाक्षेत्र में नहीं आ रहा। जो नौजवान हैं भी उन्हें दिशाहीन किया जा रहा हैं। ऐसी परिस्थिति में जब नैया मझधार में डांवाडोला हो रही हो तो कौन बंधाए धीर? यही समस्याएं हैं जो मुझे दिन-रात तड़पाती हैं। आर्य समाज का भविष्य अंधकार के गर्त में पड़ा दिखाई देता है।

भौतिकवाद के इस युग में आत्मज्ञान, धर्मनिष्ठा, चरित्र की पवित्रता, ब्रह्मचर्य एवं नियमों के पालन आदि शब्दों का नाम सुनते ही आज के नवीन भारत के युवा कानों पर उंगलियां धरते हैं। वह इन आदर्शों का उपहास करते हुए घोर विरोध पर तुले रहते हैं। आज के आधुनिक उपकरणों कम्प्यूटर, ई-मेल, इंटरनेट आदि के युग में यह प्राचीन आदर्श कितने सार्थक हैं इस पर घोर वाद-विवाद करते हैं। परन्तु वह नहीं जानते कि आर्य संस्कृति के बिना आर्यावर्त्त एक मृतक शव के समान है। यह मौलिक संकट है जो आर्य समाज के मार्ग में बाधा सिद्ध हो रहा है।

हमारे पूर्वजों ने आर्य समाज को अपने समय के आधार पर दैनिक समाचार पत्र भी दिए। विशालकाय प्रिंटिंग प्रैस भी दी तथा उन्हीं प्रैसों एवं समाचार पत्रों के माध्यम से स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का विशेष योगदान रहा। आज प्रचार के इस युग में आर्य समाज के पास ऐसा कोई माध्यम नहीं जो दूरदर्शन द्वारा फैलाए जा रहे सांस्कृतिक प्रदूषण का मुहतोड़ जवाब दे सके। आज हमारी स्थिति केवल कुएं के मेंढक के सामन है (आज दिल्ली स्थित कुछ युवक कम्प्यूटर का प्रयोग कर वेद प्रचार/प्रसार की कोशिश कर रहे हैं)। आर्य समाज की प्रकाशित होने वाली मासिक, साप्ताहिक, पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता उन लोगों तक ही सीमित है जिन व्यक्तियों में प्रचार करने की

आवश्यकता नहीं। आर्य पत्र-पत्रिकाएं केवल मात्र सूचनाओं तक ही सीमित हैं। आर्य पत्र-पत्रिकाएं जीवन की घड़ियां गिन-गिन कर प्राणशक्ति के रक्षार्थ किसी संजीवनी बूटी की प्रतीक्षा कर रही है। आज आर्य समाज को अपनी माता तथा ऋषि दयानन्द को अपना गुरु कहने वाला अब कोई लाला लाजपत राय, आज कोई भी राजनीतिक दल आर्य समाज को अपने वोट बैंक के नाम से नहीं जानता।

आर्य समाज के अधिकांश गुरुकुल आज दयानीय दशा में हैं। हमें यहां ध्यान रखना चाहिए कि गुरुकुल ही हमारी वैदिक संस्कृतिक की रीढ़ की हड्डी हैं। हमें चाहिए कि निरंतर गुरुकुल और उपदेशक विद्यालयों को प्रोत्साहित करते रहें।

अन्त में मैं अपने मन की उस टीस को फिर आप के सम्मुख रख रहा हूं कि कोई आए वैद्य दयानन्द सा जो इस रूग्ण आर्य समाज की चिकित्सा कर इसे पुन: नवजीवन प्रदान करे। क्योंकि आशा की किरण अभी बाकी है। तीन सार्वदेशिक सभाओं की प्रतिस्पर्धा जो कई समय से चल रही है। वह अब केवल दो में रह गई है। मुम्बई से संचालित सार्वदेशिक सभा का विलय सदभावना से हो गया है। इस स्वच्छ पहल के लिए दोनों प्रतिस्प्रर्धी साधुवाद के अधिकारी है। सम्पूर्ण आर्य जगत् अब एक सार्वदेशिक सभा सद्भावना वाली देखने के लिए 'पपीहा सा मुख खोले बैठा है।''

अजय टंकारावाला

टंकारा बोधोत्सव पर होने वाली प्रतियोगिताओं हेतु निमन्त्रण

आगामी ऋषि बोधोत्सव 2018 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें.....

वॉलीबॉल (शूटिंग) टूर्नामेन्ट: (सौराष्ट्र प्रदेश के युवाओं के लिए)

❏ प्रवेश पत्र दिनांक 01 फरवरी 2018 तक स्वीकृत होंगे। ❏ यह टूर्नामेन्ट 08 से 10 फरवरी, 2018 के बीच में टंकारा ट्रस्ट के परिसर में होगी। ❏ विजेता टीम को शील्ड प्रदान की जाएगी। ❏ खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

प्रश्नमंच प्रतियोगिता (सौराष्ट्र प्रदेश की शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए)

❏ कक्षा 7 से 9 तक के छात्र भाग ले सकते हैं। ❏ आर्यसमाज, वैदिक धर्म के सिद्धान्त और सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछे जायेंगे। ❏ भाग लेने के इच्छुक विद्यालय के प्राचार्य अपने विद्यार्थियों के नाम 05 फरवरी 2018 तक संयोजक को पहुंचा दे। ❏ प्रथम सिलेक्शन राउन्ड (लिखित) दिनांक 12 फरवरी 2018 को प्रात: 10.00 बजे टंकारा ट्रस्ट परिसर में होगा। जिसमें प्रथम 14 स्थान प्राप्त करने वालों का अन्तिम राउन्ड (मौखिक) उसी दिन दोपहर 2.00 बजे ट्रस्ट परिसर में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव में मुख्य मंच पर होगा। ❏ संदर्भ के लिए महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र और प्रारंभिक शिक्षा पुस्तकों का सहारा ले सकते हैं।

प्रारंभिक शिक्षा पुस्तक लेखक स्वामी शान्तानन्द सरस्वती भवानीपुर कच्छ

(उपरोक्त संदर्भ साहित्य निकटवर्ती आर्यसमाज से प्राप्त किया जा सकता है)

❏ प्रथम तीन विजेताओं को नगद पुरस्कार क्रमश: 500, 300, 200 प्रदान किया जायेगा, अन्यों को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा। ❏ प्रत्येक को प्रमाण पत्र दिया जायेगा। ❏ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने जाने का बस किराया दिया जायेगा। ❏ भोजन-आवास की सुविधा नि:शुल्क ट्रस्ट की ओर से मिलेगी।

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

यह प्रतियोगिता भारत के सभी गुरुकुलों के विद्यार्थियों के लिए होगी।

अत: समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रति वर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जाता है जिसको योग दर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगित में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने नाम अपने गुरुकुल में प्राचार्य के माध्यम से प्रमाणित किये हुए अपने फोटो सहित प्रतियोगिता संयोजक के पास भेज दे। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

❏ भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम फोटो सहित दिनांक 01 फरवरी 2018 तक पहुंचा देवे। ❏ यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 12.02.2018 दोपहर 2.00 से 5.00 के सत्र में होगी। ❏ एक गुरुकुल से अधिकतम दो विद्यार्थी भाग ले सकेंगे। ❏ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का साधारण किराया दिया जायेगा। ❏ भोजन-आवास की सुविध ा टंकारा ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क होगी। ❏ अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव
(प्राचार्य), मो.9913251448

हसमुख परमार
ट्रस्टी/प्रतियोगिता संयोजक, मो. 9879333348

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

पो. टंकारा, पिन-363650, जिला-मोरबी (गुजरात)

अपनी लाईन लम्बी करो

टंकारा समाचार कार्यालय में प्राप्त आचार्य जी का अन्तिम पत्र/सन्देश उनको श्रद्धांजलि रूप में जनहित में प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सूचना मिली, सभा के मान्य अधिकारियों के विशेष आग्रह करने तथा एक सज्जन के द्वारा टिकिट बना लेने पर कार्यक्रम बन गया।

आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः स्मृति शेष

बर्मा में पिछले 40 वर्षो तक तो सेना का शासन रहा है। 100 वर्ष पूर्व भारतवर्ष के महान् तपस्वी, साहसी, आर्य प्रचारकों ने, अंग्रेजों के आधीन देश में, अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में, अनेक प्रकार के अभाव कष्टों को झेलकर, सुदूर जंगलों में कैसे वेद धर्म का प्रचार किया होगा, यह सोचकर तो हृदय सिहर जाता है। इस देश में वेद धर्म की दुंदुभि बजायी थी, ये सब बातें पढ़-सुन-जानकर उनके प्रति अतीव श्रद्धा भाव हृदय में उमड़ जाता है।

यज्ञ वेदी पर बैठे हुवे मैंने जब, एक-एक हवन कुण्ड पर 20-20, 30-30 की संख्या में माताओं-बहिनों तथा युवाओं को स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण तथा बृहद यज्ञ के मन्त्रों का शुद्ध स्पष्ट उच्चारण सुना तो हृदय हर्षातिरेक से भाव विभोर हो गया। भारत तथा अन्य देशों से आये अभ्यागतों का स्वागत को देखकर अन्तःकरण पुलकिल हो गया। ब्रह्मदेश के आर्यो ने तो हम भारतीयों के लिए आंखें बिछा दी उनके लिए जीवन में प्रथम ही ऐसा सम्मेलन था किन्तु मैंने भी ऐसा अद्भुत, आहलादकारी, प्रेरक, अनुकरणीय सम्मेलन प्रथम बार ही देखा था, यह मेरी 28वीं प्रचार यात्रा है।

वस्तुतः इस महासम्मेलन को सफल बनाने में न केवल सभा के युवा कर्मठ पदाधिकारियों ने अथक पुरुषार्थ किया अपितु म्यांमार-बर्मा के स्थानीय आर्य समाजों के, श्रद्धान्वित तपस्वी, त्यागी आर्य सज्जनों ने भी तन-मन-धन से स्तुत्य परिश्रम किया। उनकी 40 वर्षो की मन में छिपी हुवी कल्पनाएं स्वप्न आज पूरे हुवे। विदाई के समय तो ब्रह्मदेश के आर्य जनों विशेषकर माताओं तथा बहिनों के नेत्रों से अश्रुधारा बह रही थी, वे सभी भाव विभोर हो रहे थे।

जैसे कि पूर्व पत्रों में भी मैंने संकेत किया, आज, प्रत्येक आर्य के मन में वर्तमान की वेद धर्म के सतत ह्रास तथा अवैदिक मत पंथों के तीव्रता से प्रचार-प्रचार की स्थिति को देखकर मन में खिन्नता, विषाद, चिन्ता आशंका बनी हुई है कि भविष्य में क्या होगा?

विद्वानों, प्रचारकों, दानदाताओं, प्रबन्धकों, कार्यकर्त्ताओं के परस्पर सम्मेलन होने चाहिए, जिससे एक दूसरे के प्रतिश्रद्धा विश्वास, प्रेम, निष्ठा उत्पन्न हो, दूसरों के महत्व उपयोगिता, आवश्यकता, लाभ आदि को समझ सके, एक दूसरे के सहयोगी बनें।

समाजों में साप्ताहिक सत्संग के स्थान पर दैनिक सत्संग किया जाये जिससे 7 दिनों में 15-20 घंटे अपनी अनुकूलता से किसी भी दिन यज्ञ, संध्या, भजन, सत्संग, स्वाध्याय आदि को अवसर मिल सके।

समाजों में संध्या-यज्ञादि के अतिरिक्त विद्यालय का संचालन, औषधालय की सुविधा, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, प्राणायाम, आसन, जप व्यायाम, भाषण, गीत, संगीत, चित्रकला, लेखन, यज्ञ-ध्यान आदि का प्रशिक्षण देने हेतु शिविर-सेमीनार कार्यक्रम आयोजित किये जाये, जिससे अनायास ही लोग समाज में आयेंगे, जुड़ेंगे तथा सहयोगी बनेंगे।

जिन आर्य सज्जनों को वर्तमान के अधिकारियों के कार्य तथा व्यवहार से सन्तुष्टि नहीं हैं उन्हें चाहिए वे बिना ही अधिकारी बने, बिना ही, साधन-सुविधाओं की समाज से अपेक्षा किये स्वयं के साधनों से तन-मन-धन लगाकर सार्वजनिक रूप में उत्तम कार्यो को करें, ऐसा करने से न केवल सामान्य जनता, बल्कि आर्यसभ्य भी प्रभावित होंगे, भविष्य में अधिकारी वर्ग पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा और वे अनायास ही अपने अधिकारों को सौंप देंगे।

परमेश्वर से गद्गद् होकर विनम्र प्रार्थना है कि वह अपनी कृपाकटाक्ष से हम आर्यो में, वेद धर्म को सम्पूर्ण विश्व में शीघ्र ही प्रचार प्रसार हेतु दिव्य भावना उत्पन्न करें, जिससे हम किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति को देखकर निराश न हों, अकर्मण्य न बनें। ईश्वर के पूर्ण समर्पित होकर धर्म प्रचारार्थ और तपस्या के भावों को अन्तःकरण में बनाये रखे, न केवल अपने जीवन को सार्थक बनायें अपितु सम्पूर्ण विश्व में अज्ञान-अभाव-अन्याय-पाखण्ड-अंध विश्वास में भटकते किल बिलाते मानवों को भी वैदिक श्रेष्ठ जीवन को जीने की शैली से सुपरिचित करावें- इसी भावना के साथ।

भावात्कः ज्ञानेश्वरार्यः

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी **बोधोत्सव 12, 13, 14 फरवरी 2018** को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 01 जनवरी 2018 तक भिजवाकर कृतार्थ करे। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पुष्ठों से अधिक न हो तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल **tankarasamachar@gmail.com** पर ''वॉकमेन चाणक्य'' टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय, सम्पादक टंकारा समाचार, चलभाष 9810035658

सम्पादकीय कार्यालयः ए-419, ओ३म् ध्वज सदन, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

यज्ञ एक वैज्ञानिक विवेचन

❒ आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

किसी भी मांगलिक अवसर पर हम अपनी सफलताओं और उपलब्धियों पर संतोष व्यक्त करें ये नितान्त स्वाभाविक है। सामान्य बोलचाल की भाषा में कहा जाता है कि हम इस आयोजन को धूमधाम से करेंगे। धूमधााम से सामान्यत: यह अर्थ ग्रहण किया जाता है कि हम परस्पर इकट्ठे होकर एक पार्टी दें और झूमें और गावें। वस्तुत: धूमधाम एक महत्वपूर्ण शब्द है, जो दो शब्दों के मेल से बना है। धूम का अर्थ है–धुंआ, धाम का अर्थ है, स्थान। इसका अर्थ यही है, जिस स्थान पर यज्ञ का धुंआ हो, जहां यज्ञ का आयोजन हो, उसी को ही धूमधाम कहते हैं।

यज्ञा धीनं जगत् सर्वम्, सारा संसार यज्ञ के आधीन है। जगत् को स्वस्थ तथा सुव्यवस्थित रखने के लिए यज्ञ का होना अनिवार्य है। आर्ष सिद्धान्त अग्नि से शोधक, विभाजक शक्ति मानता है क्योंकि अग्नि उर्ध्वमुखी, किन्तु सूर्य की गति को टेड़ी गति मानते हैं, अग्नि में आहूत पदार्थ शीघ्र वायुमण्डल में फैल जाता है और सूर्य की किरणों तथा विधुत शक्ति से घर्षण के कारण उसकी शक्ति असंख्य गुणा बढ़ जाती है, जिससे प्रदूषणों का निवारण और रोगनाश होने लगते है। वैदिक साहित्य में धुंओं और ज्योति को विशिष्ट माना है। 'धूम ज्योति: सलिल मरूंता सन्निपात:'' धुएं और ज्योति का सम्मिश्रण पाकर वायु और जल विशोधित होते हैं। अग्निहोत्र देवयज्ञ सूक्ष्मीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है। हवनकुण्ड में अग्नि के दहन से औषधतत्व आसक्ति होकर प्रकाश संश्लेषण और ऑक्सीकरण सिद्धान्त से असंख्य गुणा प्रभावशाली हो जाते हैं। हवन द्वारा उत्पादित तत्व असंख्य गुणा प्रदूषणों का निवारण करने में समर्थ है। जड़ी बूटी के होम से सुगन्धित स्फूर्ति तथा शान्ति प्राप्त होती है। यज्ञीय ऊर्जा का यज्ञ स्थल में चहुं ओर प्रभाव प्राणी जगत् के लिए उपयोगी है। जो वस्तु खाने में एक व्यक्ति को लाभ देती है वही वस्तु उचित ताप में जलाने पर असंख्य लोगों के लिए प्रभावकारी होती है।

औषधियों को आग पर जलाने से उनमें विद्यमान तत्व ज्यों के त्यों हवा में फैल हैं। उदाहरण के लिए दालचीनी में विद्यमान 61 प्रतिशत सिन्नोमिक, एल्डीहाईड तथा 10–12 प्रतिशत युजिनलरक्त में घुलकर उसे पतलाकर हृदय–आघात से रक्षा करने में सहायक है। इसी तरह अंजीर में विद्यमान 'फिसिन' नामक तत्व आन्त्रकृमिनाशक है। इलायची में विद्यमान टर्पिनिआल और सीनिआल तत्व शरीर के दर्द का नाशक है।

भवन की सार्थकता भावना से है, गृह की सार्थकता गृहिणी गृहिणी (नारी) से है, होम की सार्थकता होम (हवन) से है।

यज्ञ की मूल भावना है परोपकार, तो हम अपनी प्रसन्नता में दूसरों को भी सम्मिलित करें, उनकी उपेक्षा न करें, यही यज्ञ है। अंग्रेजी में घर को होम कहा जाता है, कौन नहीं चाहता कि घर में पावनता हो, यज्ञ से पावनता प्राप्त होती है तो वास्तव में होम के बिना कोई होम बन ही नहीं सकता। आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण किये हुए है। इसका निवारण यज्ञ से ही सम्भव है। अनार आदि वृक्षों का फल जल झड़ता है तब माली गुग्गल का धुंआ देकर ही उसके फल को उगाता है। यह हवन यज्ञ ही तो है।

यज्ञ (हवन) से लाभ– (1) पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवम् सुगन्धित होता है। (2) प्रदूषण दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होती है। (3) दु:ख एवं दारिद्रय का नाश होता है। (4) मानसिक शान्ति की प्राप्ति और आनन्द की वृद्धि होती है। (5) सुविचारों का जन्म होता है, जिससे बुद्धि बढ़ती है। (6) सात्विक कार्यो की वृद्धि होती है। (7) शान्ति तथा सद्भाव का प्रचार होता है। (8) देवपूजा, संगतिकरण और दान होते हैं। (9) मानवीय कर्तव्य का पालन होता है।

महर्षि दयानन्द जी का कथन है–जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आयावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरितयों अध भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।

यज्ञ आयुधारक है–यथा–यदम्न ये शुचये आयुरेवास्मिन तेन दधाति। पवित्र अग्निमें जो आहुति दी जाती है उससे यज्ञ, यजमान को आयु धारण कराता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिये।

शरीर की शुद्धि के लिए स्नान, संपत्ति की शुद्धि के लिए दान, मन की शुद्धि के लिए ध्यान तथा पर्यावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ का अनुष्ठान आवश्यक है।

– फ्लैट नम्बर 1, पूर्त्ति अपार्टमेन्ट विकासपुरी, नई दिल्ली–18, मो. 9810084806

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 20 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/– रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)** **–प्रबन्धक**

यज्ञों के द्वारा जीवन को स्वर्गमय बनावें

❒ डॉ. अशोक आर्य

यज्ञ पर्यावरण की शुद्धि का सर्वोत्तम साधन है। जहां प्रतिदिन यह यज्ञ होते हैं, वहां का वातावरण शुद्ध पवित्र हो जाता है। रोगाणु नष्ट हो जाते हैं तथा सब प्रकार के कष्ट कलेषों से मुक्त होकर प्राणी का जीवन स्वर्गिक आनन्द से भर जाता है। इस बात को मन्त्र इस प्रकार स्पष्ट कर रहा है:-

भुताय त्वा नारातये स्वरभिविख्येषं दृ॑ंहन्तां दुर्याः
पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादया म्यदित्याऽउपस्थेऽग्नेहव्य॑ंरक्ष॥ यजुर्वेद 1.11॥

विगत मन्त्र में यज्ञ शेष के महत्व को दर्शाया गया था। इसमें बताया गया था। इसमें बताया गया था यह न केवल प्रसाद ही है बल्कि सुख समृद्धि को बढ़ाने वाला होता है। इस का ही विस्तार करते हुए यहां सात बिन्दुओं पर प्रकाश डालता है। मन्त्र बता रहा है कि

1. त्याग भाव से भोगो:- मन्त्र कह रहा है कि मैं तुझे प्राणी मात्र के हित के लिए ग्रहण करता हूँ। मन्त्र ने इस प्रकार प्रकट किया है कि हम जो भी कार्य करते हैं उसमें सार्वजनक हित की बात होना चाहिए। केवल एक व्यक्ति का जिसमें हित होता हो ऐसा काम करने का कोई लाभ नहीं है। इसलिए ही मन्त्र कह रहा है कि ''मैं तुम्हें प्राणी मात्र के लिए ग्रहण करता हूँ अर्थात् जीव को सदा प्राणी मात्र के हितार्थ ही कार्य करना चाहिए।

मन्त्र आगे उपदेश करता है कि मैं तुझे इसलिए ग्रहण नहीं कर रहा कि मैं तुझे कुछ देना नहीं चाहता। मैं तुझे वह सब कुछ देना चाहता हूं जिसकी तुझे आवश्यकता है। मैं तुझे ग्रहण ही देने के लिए कर रहा हूं। न देने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। मैंने तुझे ग्रहण किया है तो इसलिए कि तेरे अन्दर परोपकार की भावना है, तेरे अन्दर दूसरों की सेवा, दूसरों की सहायता की भावना है। तेरे अन्दर यज्ञ की भावना है। इसका भाव ही परोपकार होता है, दूसरों की सहायता होता है। सहायता भी एसी कि हम जिसकी सहायता कर रहे हैं, उसको हम जानते ही नहीं, इसलिए उस पर कभी किसी प्रकार का एहसान न जता सकें। यह ही कारण है कि हम किसी को भी भोग के लिए नहीं योग के लिए ही ग्रहण करते हैं, अपने मित्रों की श्रेणी में रखते हैं।

प्रभु ने हमारे भोग के लिए जो भी पदार्थ बनाए हैं, जो भी फल फूल या वनस्पतियां पैदा की हैं, वह सब जीव मात्र के लिए हैं। उनका हम उपभोग अवश्य ही करें किन्तु मन्त्र आदेश दे रहा है कि हम इन भोगों को त्याग भाव से भोगें न की स्वार्थ भाव से। भाव यह है कि प्रभु ने हमारे उपभोग के लिए यह जो फल पैदा किये हैं, यह जो फूल पैदा किये हैं, यह जो वनस्पतियां पैदा की हैं, यह सब जीव मात्र के उपभोग के लिए हैं। जितना उदर पूर्ति के लिए आवश्यक है हे जीव। उतना ही तेरा है, उतने का ही उपभोग कर, इतने से ही त्रप्ति कर। सेष जो कुछ है, वह अन्य प्राणियों के लिए है, लालच मत कर, इसे संग्रह न कर।

2. यज्ञमय जीवन से सर्वत्र स्वर्ग मिलता है:- यह यज्ञ ही है कि जो सब का कल्याण करता है। सबको सुखी बनाता है तथा स्वर्गिक आनन्द देता है। इससे मनुष्य का ही नहीं जीव-जन्तुओं का भी पौषण होता है। परोपकार का नाम यज्ञ है। दूसरे की सेवा का नाम यज्ञ है। इसलिए ही तो कहा गया है कि जो प्रतिदिन यज्ञ करता है उसके सब और स्वर्ग ही स्वर्ग होता है। उसके आस पास का पर्यावरण शुद्ध व पवित्र हो जाता है। रोग के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। जब व्याधियों का नाश हो जाता है तो शेष रहा सुख। बस यही ही उसे मिलता है। इस का नाम ही स्वर्ग है। अत: यज्ञशील प्राणी को सदा स्वर्गिक आनन्द मिलता है।

यज्ञ करने वाले प्राणी का उभयलोक सदा कल्याण कारक होता है। हम जानते हैं कि जब देवताओं तथा राक्षसों में उत्तमता के लिए प्रतिस्पर्धा हो गयी तो परमपिता ने राक्षसों के हाथ कुहनी के पास से बांध दिये ताकि मुडें नहीं तथा उनके सामने खाना प्रोस दिया ओर खाने का आदेश दिया। राक्षस तो होते ही राक्षस हैं। वह अपना भोजन दूसरे को कैसे खिलाने का साहस करते? दूसरे से सहयोग की तो उनमें कभी भावना ही नहीं होती। बस भोजन का ग्रास उठया तथा उपर ले जा कर अपने मुख के सामने करके छोड़ दिया। परिणाम स्वरूप कहीं कुछ थोड़ा सा मुह में गया। शेष का कुछ भाग गालों पर गया, कुछ आंखों में, कुछ कानों में। इस प्रकार कोई लंगूर बन गया, कोई कुत्ता। इन्हें देखने वाले हंसने लगे।

जब इस प्रकार से ही देवों को बांध कर भोजन दिया गया तो वह देव लोग एक दूसरे के सामने बैठ गए तथा एक दूसरे को भोजन करवा कर अपने आप को भी तृप्त किया था दूसरों को भी किया और किसी प्रकार की हानि भी नहीं हुई। बस इस का नाम ही यज्ञमय जीवन है। इस का नाम ही स्वर्गिक आनन्द है। इसलिए वेद मन्त्र कहता है कि केवल अपने तक ही सीमित न रहो बलिक अन्यों के सुखमय जीवन बनाने के साधन भी पैदा करो।

3. यज्ञमय जीवन से हमारे शरीर, मन व मस्तिष्क प्रबल हों:- इस यज्ञ से हमारे परिवार का संगठन होने से हमारे घर मजबूत हो जाते हैं। हमारा सामाजिक जीवन अटूट हो जाता है। जहां प्रतिदिन यज्ञ होता है, वहां भोग की प्रवृति आ ही नहीं पाती। क्योंकि यह भोग प्रवृति का विनाषक होता है।, प्रतिबन्धक होता है। इस प्रवृति के प्रतिबन्ध से ही हमारे शरीर, हमारे मन तथ हमारे मस्तिष्क दृढ़ बनते हैं। जब घर में यज्ञमय भावना न होगी तो परिवार के सदस्य अपने स्वार्थ को ही सामने रखेंगे, जिससे घर में सदा लड़ाई-झगड़ा, कलह-क्लेष ही बना रहे गा। एसी अवस्था में चित का शान्त होना, प्रसन्न होना तो सम्भव ही नहीं होता, सब की खुशी गायब हो जाती है। इसका नाम ही नरक है। इस अवस्था में अन्त कैसे होता है? पूरे परिवार के नाश के रूप में।

4.यज्ञवृति से हृदय विशाल बनता है:- प्रभु कहते हैं कि मैं उस व्यक्ति को ही प्राप्त होता हूं जिसमें यज्ञवृति हो। हमारा यह जो शरीर है वास्तव में यह पृथिवी के समान है। हम इसे एसा भी कहते हैं कि इस शरीर में हमने प्रत्येक शक्ति का विस्तार किया है। प्रभु कहते हैं कि मैं उस विशाल हृदय रूपी अन्तरिक्ष को हमारी इस यज्ञ रूपी अनुकूलता के कारण, उत्तमता के कारण प्राप्त करता हूं। भाव यह है कि इस के कारण जब पवित्रता आ जाती है तो वह प्रभु उस में आकर विराजमान हो जाते हैं। इतना ही नहीं यज्ञ की इस भावना से हमारे हृदयों में विशालता आती है। परोपकार व दूसरे के सहयोग की इच्छा शक्ति आती है।

5. यज्ञ से ही हम फलते फुलते है:– जो जीव यज्ञमय जीवन वाला होता है उसके लिए प्रभु प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि हमारे इस मानव शरीर रूपि भवन्की नाभी यह यज्ञ ही है। यही इसका केन्द्र है तथा परमपिता परमात्मा ने ही हमेमिस में स्थापित किया है। गीता भी तो इस तथ्य पर ही प्रकाश डालते हुए कह रही है कि ''इस यज्ञ से तुम फलो फूलो। यह यज्ञ तुम्हारी सब्मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला हो। भाव यह कि इससे ही सब कामनाएं, सब इच्छवाएम पूर्ण होती हैं।

6. आदीन व दिव्यगुणों वाले बनेम: आदीनता से युक्त बनें। आदीन पुरुष मैं तुझे अदिति को सौंप रहा हूँ। तुंने जो कल्याण के कार्य किए हैं, उसके कारण तेरा अदिति के पास निवास होना आवश्यक है। इस कारण ही मैं तुझे अदिति को सौंप रहा हूं। उसकी गोद में दे रहा हूं। इस आदिति की गोद में जाकर तूं आदीन बनता है। इसकी गोद में जा कर तूं दिव्य गुणों का स्वामी हो जाता है। हां! जब तूं हीन भावना से उपर उठ गया है तो इसका भाव यह नहीं कि मैं अभिमानी बनकर, घमण्डी बन जाऊं। इसका भाव है कभी किसी के आश्रित न रहना, रोगी न रहना आदि। प्रभु कहते हैं कि हे यज्ञमय इस से बचने से ही मेरे में आदीनता तथा विनीतता की सुन्दर भावना आ जाती है। इस शरीर में इनका समन्वय हो जाता है।

7. यज्ञ से हम कभी अलग न हों:– प्रभू इस मन्त्र के माध्यम से हमें उपदेश करते हुए मन्त्र के अन्तिम भाग में हमें उपदेश कर रहे हैं कि हे जीव! तूं आगे बढ़ने वाला है। तुंने इसका स्वयं प्रयोग करके इस के लाभ को भी आत्मसात कर लिया है। तो भी तूं सदा इस बात को याद रखना कि तुंने इस हव्य की रक्षा करनी है। इसे बनाए रखना है। तूंने अपने जीवन को खूब यज्ञमय बनाया है। इसे यज्ञमय ही बनाये रखना। इस वाक्य को अपने लिए आदर्श वाक्य ही बनाए रखना। इस आदर्श वाक्य के आधार पर ही तूं सदा परोपकार करते रहना, दूसरों की सहायता करते रहना, दुसरों का मार्ग दर्शन करते रहना तथा यज्ञमय जीवन से कभी अलग मत होना।

–पॉकेट–1, प्लाट 61/1, रामप्रस्थ ग्रीन, वैशाली–201010, मो. 9718528068

टंकारा बोधोत्सव 2018

हर्ष का विषय है कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 12, 13, 14 फरवरी 2018 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास (आने की पूर्व सूचना देने पर) एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

निवेदक–रामनाथ सहगल, ट्रस्ट मन्त्री

एयर इण्डिया हवाई जहाज से दिल्ली से राजकोट/टंकारा सीधे डेढ़ घंटे में

टंकारा के ऋषि भक्तों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि अब दिल्ली से राजकोट के लिए एयर इण्डिया की सीधा फ्लाईट्स आरम्भ हो गई है। ऋषि भक्तों के लिए सुविधाजनक रहेगा। ऋषि भक्तो के सुविधा हेतु 11 फरवरी 2018 रविवार सायं 5.05 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 495 राजकोट के लिए जायेगी। राजकोट से टंकारा मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर है। इसी तरह राजकोट से दिल्ली के लिए बुधवार सायं 7.30 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 496, टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त इसका लाभ उठा सकते हैं।

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन–पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन–पोषण पर **7000/–**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

व्यक्ति बूढ़ा कब होता है?

तुम्हारी लम्बी उम्र तुम्हें बूढ़ा नहीं बनाती। तुम बूढ़े होते हो, जब तुम प्रगति करना बंद कर देते हो।

ज्यों ही तुम यह महसूस करने लगते हो कि जो तुम्हें करना था वह कर चुके: ज्यों ही तुम यह सोचने लगते हो कि जो तुम्हें जानना था वह जान चुके, ज्यों ही तुम बैठ कर अपने किये के परिणामों को भोगना चाहते हो, इस भावना के साथ कि तुम जीवन में पर्याप्त कार्य कर चुके, तो तुरन्त बूढ़े हो जाते हो और तुम्हारा क्षय शुरु हो जाता है।

... एक ऐसी वृद्धावस्था है जो उम्र के कारण आयी वृद्धावस्था की अपेक्षा कहीं अधिक खतरनाक और कहीं अधिक वास्तविक है: विकास करने और प्रगति करने की अक्षमता।

जैसे ही तुम आगे बढ़ना, प्रगति करना, स्वयं को बेहतर बनाना, उन्नति और विकास करना, स्वयं को बदलना बंद कर देते हो, तुम सचमुच ही बूढ़े हो जाते हो अर्थात् तुम विघटन की ओर अधोगामी हो जाते हो।

ऐसे युवा हैं जो वृद्ध हैं और ऐसे वृद्ध हैं जो युवा हैं। यदि तुम अपने भीतर प्रगति एवं रूपान्तर की यह अग्निशिखा वहन करते हो, यदि तुम सब कुछ पीछे छोड़ने के लिए तैयार हो ताकि तुम चौकस कदमों से आगे बढ़ सको, यदि तुम नयी प्रगति, नयी उन्नति, नये रूपान्तर के लिए सदैव खुले हो तो तुम सदा सर्वदा युवा हो। लेकिन यदि तुम जो कर चुके हो उसी से संतुष्ट होकर बैठे रहते हो, यदि तुम्हें यह लगता है कि तुम अपने लक्ष्य तक पहुँच चुके हो और अब अपने प्रयासों के फल का उपभोग करने के अतिरिक्त कुछ करने को शेष नहीं बचा है तब समझो तुम्हारा आधे से अधिक शरीर कब्र में है: यह जर्जरता और सच्ची मृत्यु है।

जो कुछ किया जा चुका है, वह उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है, जो करने के लिये शेष है।

पीछे मत देखो। आगे देखो–हमेशा आगे और हमेशा आगे बढ़ते चलो।

युवा होने का अर्थ है भविष्य में जीना।

युवा होने का अर्थ है हमें जो होना चाहिए वह होने के लिए सदैव वह त्यागने के लिए तत्पर रहना जो कि हम हैं।

युवा होने का अर्थ है कभी किसी चीज को असाध्य न मान बैठना। यौवन व्यक्ति की अल्पायु पर निर्भर नहीं करता बल्कि बढ़ने और प्रगति करने की क्षमता पर निर्भर करता है। बढ़ने का तात्पर्य है अपनी क्षमताओं को बढ़ाना, अपनी अंत:शक्ति को बढ़ाना, प्रगति का अर्थ है कि व्यक्ति के पास पहले से जितनी क्षमताएं हैं, उनको निरन्तर और अधिक परिपूर्ण बनाना।

सुखी और सार्थक जीवन के लिए अनिवार्य है निष्कपटता, विनम्रता, अध्यवसाय और प्रगति के लिए अतोषणीय प्यास। सबसे बढ़कर व्यक्ति को प्रगति की असीम संभावना के बारे में निश्चयी होना चाहिए। प्रगति ही यौवन है, सौ वर्ष की आयु में भी व्यक्ति युवा हो सकता है।

प्रगति का आनन्द– व्यक्ति सदैव बहुत जल्दी में रहता है, वह चाहता है कि प्रस्तुत काम बहुत शीघ्र समाप्त हो जाये। वह प्रयास के बाद कहता है, ''ओह! मैंने प्रयास कर लिया, अब मुझे प्रयास का पुरस्कार मिलना चाहिए।''

वास्तव में ऐसा इसलिए होता है कि उसमें प्रगति का आनन्द नहीं है। प्रगति का आनन्द कल्पना करता है कि यदि तुमने अपने सामने रखे हुए लक्ष्य को प्राप्त कर भी लिया है–उस लक्ष्य को लो जो हमारी दृष्टि में है: यदि हम अतिमानसिक जीवन, अतिमानसिक चेतना को प्राप्त कर लें–तो प्रगति का यह आनन्द कहता है, परन्तु यह लक्ष्य समय की शाश्वतता में मात्र एक अवस्था होगा। इसके बाद कुछ और होगा, और तब उसके बाद कुछ और, फिर कुछ और, और व्यक्ति को सदैव आगे बढ़ते जाना होगा और यही बात है जो तुम्हें आनन्द से भर देती है। जब कि यह विचार, ''आह, यह कितना नीरस है! इससे व्यक्ति तुरन्त बूढ़ा हो जाता है और उसका विकास रूक जाता है।

यौवन की परिभाषा: हम कह सकते हैं कि यौवन है सतत विकास और निरन्तर प्रगति–विकास क्षमाताओं का, संभावनाओं का, कर्मक्षेत्र और प्रगति ब्योरों को सम्पन्न करने में।

स्वभावत: ही, किसी ने मुझसे पूछा ''व्यक्ति जब कद निकालना बंद कर देता है तब कद निकालना बंद कर देता है तब क्या वह युवा नहीं रहता?'' मैंने उत्तर दिया, ''निस्संदेह:, मैं नहीं समझता कि व्यक्ति निरन्तर बढ़ा करता है। लेकिन वह विशुद्ध भौतिक रूप की अपेक्षा दूसरे प्रकार से भी बढ़ सकता है।''

कहने का तात्पर्य है कि मानव जीवन में क्रमिक कालवधियां आती हैं। जैसे जैसे तुम आगे बढ़ते हो, कोई चीज एक रूप में समाप्त हो जाती है और यह अपना रूप बदल लेती है।... स्वभावत:, इस समय हम सीढ़ी के उच्चतम सोपान पर पहुंच जाते हैं और फिर नीचे आ जाते हैं, परन्तु यह वास्तव में शर्म की बात है, ऐसा नहीं होना चाहिए, यह बुरी आदत है। लेकिन जब हम विकास करना बंद कर देते हैं, जब हम उस ऊँचाई पर पहुंच चुकते हैं जिसे हम समझते हैं कि यह हमें सर्वोत्तम रूप से अभिव्यक्त कर रही है, तब हम विकास की इस शक्ति को ऐसी शक्ति में रूपान्तरित कर सकते हैं जो हमारे शरीर को पूर्णता देगी। इसे दृढ़ से दृढ़कर बनायेगी, अधिकाधिक स्वस्थ बनायेगी और अधिक प्रतिरोध–शक्ति प्रदान करेगी और हम शारीरिक प्रशिक्षण का अभ्यास करेंगे जिससे शारीरिक सौन्दर्य का एक आदर्श बन सकें। और तब, उसी समय, हम अपने चरित्र, चेतना, ज्ञान, शक्तियों की पूर्णता की खोज का धीरे–धीरे कार्यारम्भ करेंगे और अन्तत: अद्‌भुत रूप से शिव और सत्य की पूरिपूर्णता में भगवान पूर्ण प्रेम का प्रारम्भ और खोज करेंगे।

यही बात है। और यह कार्य निरन्तर होना चाहिए और जब चेतना के एक निशितच स्तर को प्राप्त कर लिया है, जब इस चेतना को भौतिक जगत् में सिद्ध कर लिया और तुमने भौतिक जगत् को इस चेतनाके बिम्ब में रूपान्तरित कर लिया तब तुम एक और सोपान पार कर जाओगे और दूसरी चेतना में पहुंच जाओगे और इसके बाद पुन: शुरु कर दोगे।

लेकिन यह बात आलसी लोगों के लिए नहीं है। यह उन लोगों के लिए है जो प्रगति करना पसंद करते हैं। उनके लिए नहीं जो कहते हैं, मैं अपने जीवन में कठोर श्रम कर चुका हूँ, अब आराम करना चाहता हूं।

अमृत-वचन

❐ पूनम मदान

ओ३म् नाम का अमृतपान करने से मानव के विचारों में परिवर्तन आता है, आत्मिक सुख की अनुभूति होती है, हम अपने आपको शक्तिशाली अनुभव करते हैं, कल तक हम जिस सुख की प्राप्ति के लिए भटक रहे थे वह पानी का बुलबुला सा प्रतीत होता है।

हम जब भी कुछ सोचते हैं तो हमारा ध्यान केवल सांसारिक विषयों पर ही केन्द्रित रहता है। जो अजर, अमर, सत्य, नित्य व सर्व शक्तिमान है इस जगत का सृजनकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्त्ता है उसे जानते हुए भी जानने का प्रयत्न नहीं करते। आखिर क्यों?

मानव अपना लक्ष्य भूलता जा रहा है। वह मन के घोड़े पर सवार होकर उसी दिशा में दौड़ा जा रहा है जहां वह उसे ले जा रहा है। जब तक मानव मन के घोड़े की लगाम को वश में नहीं करता, आत्मा को उसका सवार नहीं बनने देता तब तक वह मंजिल तक नहीं पहुंच पाता।

मनुष्य में तीन गुण होते हैं और इन्हीं के सहारे उसके जीवन को गति मिलती है। मन रजोगुणी है, अहंकार तमोगुणी और बुद्धि में छिपी विवेकशक्ति.... सतोगुणी है। जब तक मनुष्य में विवेकशक्ति पुष्पित नहीं हो जाती, मनुष्य पशु बना रहता है।

यह शरीर आत्मा का मन्दिर है जब इसमें अहंकार का दीपक जल उठता है तो मानव डगमगा जाता है, पथ-भ्रष्ट हो जाता है, उसके जीवन का एक-एक पग दु:खदायी हो जाता है।

विनम्रता जीवन का अमूल्य वरदान है यह प्रारम्भ से जिससे घर कर लेता है-उस मनुष्य का जीवन दिव्यमय हो जाता है।

स्वार्थ में अंधे मनुष्य को न आगे दिखाई देता है, न पीछे। इस तरह का जीवन मनुष्य को कहां ले जाएगा? कोई नहीं जानता।

मन किसी का नहीं होता, यह तो उस जलधारा के समान है जो समय के साथ अपनी दिशा बदलता जाता है।

प्रभु ने अगर चलना सिखाया है, दौड़ने की शक्ति दी है इसलिए नहीं कि अंधे की तरह चलें-दिशा ही भूल जाएं।

परमेश्वर ने दानवता को कुचलने के लिए मानव को विवेक शक्ति दी है जो अन्दर देवासुर संग्राम कराए रहती है। यह संग्राम ऐसे आदर्शो का है-एक ऐसे मार्ग का जो मानव को उस स्वर्णिम मार्ग दर्शन कराता है-जो सात्विक है।

– संस्कृत अध्यापिका, आर.एस. मॉडल, सीनियर सैकण्डी स्कूल, लुधियाना

बुजुर्गो का आशीर्वाद

जॉर्ज बहुत ही नेक स्वभाव के थे। एक दिन उन्होंने एक विकलांग वृद्धा को देखा जिसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। वे वील चेयर पर बैठी रहती थी। अक्सर उनके वील चेयर को कोई नेक मनुष्य इधर से उधर घुमा जाता था। एक बार जॉर्ज ने उन्हें बगीचे में सुन्दर फूलों को निहारते पाया तो उनसे बोला, 'माताजी, आप बगीचे के फूलों को इतना ध्यान से क्यों देख रही हैं? वृद्धा बोली, बेटा, मैं यह देख रही हूं कि प्रकृति कितनी सुन्दर है। उसने पूरी दुनियां में अलग-अलग रंग भरे हैं इसी कारण हम सभी अनेक कमियों के होते हुए भी बेहद धनवान है। वृद्धा के ये शब्द जॉर्ज के ह्रदय को छू गए। अब वह जब भी बगीचे में घूमने आते तो अक्सर वृद्धा को वील चेयर पर इधर से उधर घुमाते। इस दौरान उन्होंने देखा कि वील चेयर के लोहे के पहिए, जब उबड़ खाबड़ जमीन पर चलते, तो गहर झटके लगते थे। इससे वृद्धा को बहुत तकलीफ होती थी। जॉर्ज बेहद बुद्धिमान थे। उन्होंने उस वील चेयर में सुधार करने की सोची जिससे वृद्धा की जिन्दगी आरामदायक बन सके। इसी दौरान उनकी नजर एक ऐसे पदार्थ पर पड़ी जो बेहद कोमल और लचीला था। वह रबर था उन्होंने रबर के गुच्छे लिए और लोहे के पहियों के किनारों पर उन्हें कसकर लपेट दिया। इससे वील चेयर पर धक्के लगने कम हो गए और वृद्धा को भी बहुत राहत मिली। उसने जॉर्ज को ढेरों आशीर्वाद दिए और बोली, देखना बेटा तुम एक दिन इस दुनिया में बहुत नाम कमाओगे। वृद्धा की बात सत्य साबित हुई। जॉर्ज ने अपनी मेहनत से रबर के टायर्स बनाने आरंभ कर दिए जो शीघ्र ही पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गए। कुछ ही समय में उनकी गिनती विश्व के अमीर और नेकदिल लोगों में होने लगी। ये जॉर्ज सी डनलप थे जिनके रबर के बनाए टायर आज भी दुनिया भर में लोकप्रिय हैं।

सफल एवं शांतिपूर्ण जीवन के कुछ सिद्धान्त

❐ डॉ. लक्ष्मण सिंह टांक

❑ ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वशक्तिमान, निराकार, न्यायकारी, सर्वाधार, दयालु, अजर, अमर और सृष्टिकर्ता है। अत: इसी विचार को मन में रखते हुए किसी भी रूप में उसी की उपासना अराधना एवं स्तुति करनी चाहिए।

❑ काम, क्रोध, मद, लोभ एवं मत्सर ईर्ष्या प्रत्येक जीव मानव के लक्षण है। इनको पूर्णत: समाप्त करना तो असम्भव है परन्तु लगातार अभ्यास और प्रयास से इनको न्यूनतम से न्यूनतम करने की मानसिकता रहनी चाहिए। जिन व्यक्तियों ने ऐसा किया है वे महान पुरुष बने है जिनको हम स्मरण करते हैं। प्रत्येक मनुष्य को ऐसा करने का भरसक प्रयास करना चाहिए।

❑ मन, वचन, कर्म में जितनी भी समन्वयता आती जायेगी व्यक्तित्व उतना ही निखरता जायेगा। प्रत्येक को इसके लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

❑ व्यक्ति को सर्वदा अच्छे ज्ञानवर्धक, प्रेरणा स्त्रोत साहित्य को पढ़ना चाहिए तथा अच्छी संगत में ही रहना चाहिए। संगत का मनुष्य पर बहुत बड़ा प्रभाव होता हैं।

❑ मनुष्य को सर्वदा पर पीड़ा, पर निंदा एवं दुर्व्यसनों से बचना चाहिए।

❑ समय अति गतिशील है। अत: समय की बर्बादी नहीं करनी चाहिए। बीता समय कभी वापिस नहीं आता है।

❑ मनुष्य को प्रतिस्पर्द्धात्मक होना चाहिए न कि ईर्ष्यालु। सच्चे मन व श्रम से कर्म करना चाहिए यह भी सोचना चाहिए कि समय से पूर्व व भाग्य से अधिक कुछ मिलने वाला नहीं।

– सी.सी. कॉलेज अध्यक्ष नामदेव, धर्मशाला शुक्रताल (मुजफ्फनगर)

महर्षि दयानन्द की वेदना एवं उनके कार्यो की सफलतायें

❒ चन्द्रसेन गोयल

श्रावण सुदी! संवत् 1936 (लगभग अगस्त 1879) से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी मुरादाबाद में थे, कायमगंज के श्री राम लाल जी वर्षा ऋतु के कष्ट झेलते हुए मुरादाबाद में श्री इन्द्रमन जी के घर ठहरे हुए थे, वह महर्षि से यज्ञोपवीत लेना चाहते थे। एक दिन श्री इन्द्रमन जी, श्री राम लाल जी को आगे करते हुए महर्षि से कहा ''भगवन्! यह महाशय बड़े श्रद्धालु भक्त हैं, आपसे धर्म–दीक्षा ग्रहण करना चाहते हैं, इसी लगन में बड़े कष्ट सहते हुए यहाँ आए हैं।'' महर्षि ने श्री राम लाल जी के धर्मभाव और दृड़ धारणा को देखकर, शुभ समय विधि पूर्वक, उन्हें यज्ञोपवीत प्रदान किया। गायत्री का उपदेश देकर उसे शुभ शिक्षा दी। जब उसने गायत्री का उच्चारण महर्षि को सुनाया तो उन्होंने बड़े वत्सल भाव से उसे आर्शीवचन दिया, अपना परम पुनीत हाथ उसकी पीठ पर प्रेम से फेरते हुए कहा–''वत्स! हमारा शरीर बहुत दिन तक नहीं रहेगा। आप आजीवन हमारी पुस्तकों से उपदेश लेते रहना। जहाँ तक हो बने पड़े अपने भूले भटके भाईयों को भी सन्मार्ग दिखलाते रहना। महाशय राम लाल जी ने गुरुदेव के उपदेशामृत को सिर आंखों पर स्वीकार किया और अन्त:करण में बसा लिया। श्री राम लाल जी दस दिन पर्यन्त श्रीचरण शरण में सत्संग लाभ करते रहे। एक दिन उन्होंने बद्धांञजली होकर विनय की, भगवन! आपके आरोग्य पर कोई आघात हुआ जान पड़ता है।'' महाराज ने कहा–''इस देह को कई बार विकट तथा विषम विष दिया गया है। ऐसे कालकूट विषों को, कितना ही योग–क्रियाओं से वमन तथा वस्ति कर्म द्वारा, निकाल दिया जाए परन्तु रक्त में मिश्रित हुआ हलाहल सर्वांश में नहीं निकलता। उसका प्रभाव कुछ न कुछ बना ही रहता है, यही कारण है जो मेरे स्वास्थ्य की आधारशिला हिल गई हैं। यदि मुझ पर ऐसे भीषण विष प्रयोग ना किए जाते, तो इस शरीर पर शिथिलता का चिन्ह एक शताब्दी में तो कदापि न दीख पड़ता, न ही इतनी देरा जरा–रोग इसके पास फटकने पाता।'' श्री राम लाल जी ने फिर प्रार्थना की ''गुरुदेव''! जब आप अपने भक्त जनों को नैराश्य निशा दिखाने वाले शब्द कहने लग गये हो तो आप ऐसे सुयोग्य शिष्य क्यों नहीं बनाते जो नौका के निपुण नाविक बन सकें, जो सर्वस्व स्वाहा करके भी आपके उद्देश्य की पालना करें।''

महाराज ने गम्भीर भाव से कहा–''वत्स! मैंने पहले पहल पाठशालाएं चलाकर अनेक पण्डित शिष्य बनाए। वे लोग मेरे सम्मुख तो बहुतेरी विनय–अनुनय प्रदर्शित करते परन्तु मुझसे पृथक होकर वैसे के वैसे पौराणिक बने रहते। कई बार तो मेरे प्रतिकूल अपनी चालों का ताना–बाना बुनने लग जाते। अब तो मुझे निश्चय हो गया है कि इस जन्म में मुझे सुयोग्य शिष्य नहीं मिलेगा। इसका प्रबल कारण भी हैं। मैं तीव्र वैराग्य वश, यौवन काल में ही अपने पूज्य माता–पिता आदि परिवार–परिजन का परित्याग कर, मृत्यु को जीतने के लिए योगाभ्यास करता रहा हूँ। मैंने घर छोड़ते समय माता की ममता का कोई ध्यान नहीं किया, पितृ ऋण भी नहीं उतारा। ये सब ऐसे कर्म हैं, जो मुझे सुयोग्य शिष्य मिलने के मार्ग में प्रबल प्रतिबन्धक हैं। परन्तु निराशा की कोई बात नहीं है, आर्य समाज में ऐसे जन अवश्य प्रकट होगे, जो मेरे परम् लक्ष्य की पूर्णता से पालना करेंगे।''

❑ महर्षि के उपरोक्त वचनों से यह प्रकट होता है कि विरोधियों ने महर्षि के कर्मचारियों के एवं सहयोगियों के साथ मिलकर एवं लालच देकर बार–बार विष दिया लेकिन उन्होंने किसी के प्रति विद्वेष नहीं रखा, लेकिन उनका शरीर धीरे–धीरे क्षीण होने लगा था। ❑ महर्षि द्वारा लिखित ग्रन्थों ने बुद्धि जीवियों के मन पर क्रान्तिकारी प्रभाव डाला। भारत का स्वाधीनता संग्राम तीव्र से तीव्रतर होता गया। क्रान्तिकारियों की एक श्रृंखला बन गयी जिन्होंने समय–समय अपना जीवन निछावर कर दिया। महर्षि के सत्यार्थ प्रकाश ने युवकों के हृदयों का मथ दिया उनका जीवन बदल गया। समाज में नई क्रान्ति का बीज बोया गया, सुधारवादी आन्दोजन प्रारम्भ हो गये, अछुतोधार, स्त्री शिक्षा, बाल–विवाह निषेध, विधवा विवाह, स्वदेशी शिक्षा पद्वति, स्वदेशी उद्योग जैसे आन्दोलनों ने भारत को झकझोर दिया। ❑ महर्षि को अपने जीवन काल में चाहे कोई विशिष्ट शिष्य नहीं मिला लेकिन उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज में अनेक कर्मठ कार्यकर्त्ता एकत्र हो गये, जिन्होंने महर्षि के सिद्धान्तों एवं कार्यो को बढ़ाया। आर्य समाज में ऐसे उद्भट्ट विद्वान सन्यासी हुए जिन्होंने अपना पूरा जीवन आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में लगा दिया। महर्षि ने अपने जीवन काल में ही श्रीमती परोमकारिणी सभा का निर्माण किया जो उनकी वसीयत के अनुसार उनकी उत्तराधिकारिणी बनी। इस सभा ने महर्षि के शेष कार्यो को पूरा किया एवं आगे बढ़ाया। पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द पं. गुरुदत्त, लाल लाजपत राय जैसे लोगों ने अपना पूरा जीवन आर्य समाज को अर्पण कर दिया। स्वामी स्वतन्त्रता नन्द, स्वामी आत्मानन्द, श्री नारायण स्वामी जैसे सन्यासी महानुभावों ने वैदिक सिद्धान्तिों को विस्तृत किया और जन–जन तक पहुंचाया। आज पूरे देश में गुरुकुलों एवं डी.ए.वी. और आर्य संस्थानों का जाल फैला हुआ है, जो महर्षि के मन्तव्यों को पूरा कर रहे हैं। भारत के अलावा, दुनिया के विभिन्न देशों में आर्य समाज महर्षि की विशिष्टाओं को प्रकट रहे है एवं आर्य सिद्धान्तों का प्रचार कर रही है। प्रतिवर्ष होने वाले अर्न्तराष्ट्रीय आर्य सम्मेलन महर्षि का सन्देश दे रहे हैं। उपरोक्त सन्दर्भ महर्षि के जीवन चरित्र लेखक की स्वामी सत्यानन्द जी की पुस्तक श्रीमद् दयानन्द प्रकाश से लिया गया है।

– 22 तिलक रोड, देहरादून–248001, मो. 9411109340

मुक्तक

❒ महात्मा चैतन्य मुनि

उजाड़ कर बस्तियां यहां के लोग मलहारें गाते हैं,
यहां के झरने–दरिया सभी प्यास और बढ़ाते हैं।
तुम आ बैठे हो दम लेने जिन दरख्तों के नीचे
ये वो हैं जो छाया नहीं तपती आग बरसाते हैं।।

दुष्टों का संहार करना अभी शेष है,
यथायोग्य व्यवहार करना अभी शेष है।
अभी तुम सूरज मत ढलने देना केशव
जयद्रथ पापी का मरना अभी शेष है।।

यहां बगुले हंसों का उपहास उड़ाते हैं,
लूटेरे भी त्याग का उपदेश सुनाते हैं।
रोशनी को चिढ़ाना जैसे धर्म बन गया–
जुगनू भी सूरज को आंखें दिखाते हैं।।

जीवन पर्व पर मृत्यु गीत गाने लगे हैं,
अपने कन्धों पर अपने शव उठाने लगे हैं।
जिन हाथों में सौंपी थी रोशनी के लिए
वे ही उन मशालों से घर जलाने लगे है।।

–महादेव, सुन्दर नगर, हिमाचल प्रदेश–175018

આધુનિક ભારત અને ઈસ્લામ

સમ્પાદકઃ- પ્રિયેન્દુ

શ્રી મહેશ અનંત કરંદીકરે Islam in India's translation to Modernity *નામે પુસ્તક લખ્યું હતું, જેનું સંક્ષિપ્ત રૂપાંતર - ભાષાંતર ઈ. સ. ૧૯૭૨માં લખનૌના શ્રી અશોકજીએ કર્યું હતું. ભાષાંતરિત પુસ્તકનું પ્રાક્કથન ભારતમાં સમાજવાદી આંદાલનના પ્રણેતાઓમાંના એક શ્રી અચ્યુત પટવર્ધને લખ્યું હતું. આ લેખ આજના કહેવાતા સમાજવાદી અને ધર્મનિરપેક્ષવાદિઓની આંખ ઉઘાડી નાખનારો છે.*

હિન્દૂ-મુસ્લિમ એકતા માટે શહીદ શિરોમણીનો સ્વામી શ્રદ્ધાનન્દજી પુરુષાર્થ મોટો હતો. પુરુષાર્થના ભાગ રૂપે તેમનું પ્રવચન દિલ્હીની જામા મસ્જિદમાં પણ થયું હતું, પરિણામ શું આવ્યું તે આપણી સામે છે.

મેં તો અચ્યુત પટવર્ધનજીના પ્રાકકથનું અનુવાદ અને સમ્પાદન માત્ર કર્યું છે. ભાષા અને વિચાર જેમના તેમ રાખવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે.

- પ્રિયેન્દુ

આપણી સહુથી વિકટ સમસ્યા રાષ્ટ્રીય એકતા જાળવી રાખવાની છે. બ્રિટીશ અધિકારિઓનો દાવો હતો કે અંગ્રેજી રાજ્યને કારણે જ ભારતમાં એકતા સ્થપાઈ છે. આ વાતનો ઈન્કાર કરવા મુશ્કેલ છે કે અંગ્રેજી રાજ્ય પહેલા ભારત રાજનીતિક રૂપે એક નહોતું. સાથે સાથે એ પણ છે કે રાષ્ટ્રીય એકતાનો સિદ્ધાન્ત પણ બસો વર્ષ કરતા જુનો નથી. દેશમાં અત્યારે ભાષાઓ અને પ્રદેશો વચ્ચે લડાઈઓ ચાલી રહી છે, અને લોકતંત્રની દુર્દશા થઈ રહી છે. આ બધું જોઈને ખૂબ નિરાશા થાય છે. દુ:ખની વાત તો એ છે કે આપણા રાજકીય પક્ષોને આ દેખાતું નથી કે એ બધાની સામે સંકટ એક સમાન છે અને એનો સામનો રાષ્ટ્રિય એકતાથી જ સંભવ છે. બહારના શત્રુઓનો સામનો કરવા માટે દેશના લોકો અને રાજકીય પક્ષો સંપી જઈ શકે છે પરંતુ આનાથી સંતોષ ન માનવો જોઈએ. કારણે કે બહારના શત્રુઓના મુકાબલે અંદરના શત્રુઓ ભયજનક છે, પરસ્પરની ફૂટ અને વિઘટનકારી શકિતઓ છે, જેની સામે લડવા માટે દેશના બધા વર્ગોમાં મજબૂત એકતા હોવી જરૂરી છે. દેશની એકતા માટે આવી જ ખતરનાક સમસ્યા અલ્પસંખ્યકોની, વિશેષ કરીને મુસલમાનોની છે.

ઈ.સ. ૧૯૪૧માં અમે અમારા કૉમ્યૂનલ ટ્રાયએંગલ (સાંપ્રદાયિક ત્રિકોણ) નામના ગ્રંથમાં હિન્દૂ મુસ્લિમ સમસ્યા પર વિચાર કર્યો હતો અને મત જાહેર કર્યો હતો કે મુખ્યત: અંગ્રેજી સરકાર જ બંને સંપ્રદાયોને એરબીજાની સામે લડાવી રહી છે. પરંતુ સ્વતંત્રતાના વીસ વર્ષ પછી કહેવું પડે છે કે જો અમારી વાત સાચી હોત તો સ્વતંત્ર ભારતમાં મુસ્લિમ સમસ્યા ઉકેલાઈ ગઈ હોત. પરંતુ આવું નથી થયું.

પાકિસ્તાનની સ્થાપના હવે એક ઈતિહાસ બની ગયો છે. આ ઈતિહાસ દુ:ખદ છે પણ આમાંથી આપણે ઘણો બોધપાઠ લઈ શકીએ છીએ. મુસ્લિમ પ્રાંતોની સમસ્યા એ પ્રાંતો કરતા જુદી હતી, જ્યાં એમની સંખ્યા ઓછી હતી. ઈતિહાસની એક વિડંબના છે કે પાકિસ્તાનની સ્થાપના ઉત્તરપ્રદેશ, બિહાર, મુમ્બઈ આદિના આજ મુસલમાનોના જોર પર થઈ છે. અસ્તુ, પાકિસ્તાનની સ્થાપનાથી હિન્દૂ-મુસ્લિમ સમસ્યાનો એક અધ્યાય પૂરો થાય છે અને વિભાજન પછીની સ્થિતિમાં આ સમસ્યાનું નવેસરથી અધ્યયન કરવું જરૂરી છે.

એ પ્રશ્ન સ્વાભાવિક છે કે શું દેશ વિભાજન અનિવાર્ય હતું. રાજનીતિના વિદ્યાર્થી માટે એવો વિચાર કરવો લાભદાયી હશે કે દેશની અખંડતા શા માટે કાયમ ન રહી શકી. આટલા દિવસો વિતી ગયા પછી એ ઘટનાઓ ઉપર તટસ્થ દૃષ્ટિથી વિચારી અને પુછી શકાય કે ભારતમાં રાષ્ટ્રીયતાના વિકાસમાં શું દોષ રહી ગયો. શા માટે મુસલમાનોમાં એટલી બધી અરાષ્ટ્રીયતા આવી ગઈ કે દેશ વિભાજનની હઠ પકડી લીધી.

મારો વિચાર છે કે ઈ. સ. ૧૯૪૭માં કોઈને કોઈ રીતે દેશનું વિભાજન અનિવાર્ય થઈ ગયું હતું. પણ આપણે વિચારવું જોઈએ કે એમાં આપણો દોષ કેટલો હતો. સ્વતંત્રતા આંદોલનના ક્રમ પર દૃષ્ટિપાત કરીને હું એ પરિણામ પર પહોંચ્યો છું કે ગાંધીજીની હિમાલયાકાર ભૂલ હતી ખિલાફતના આંદોલનને સમર્થન આપવાની. આ ભૂલના ઘાતક પરિણામ આવ્યા. આ અત્યન્ત પ્રતિક્રિયાવાદી પગલું હતું. પ્રગતિશીલ મુસલમાનોએ કદાચ ખિલાફતનું સમર્થન નહોતું કરવું જોઈતું. ખલીફાના પદને સમાપ્ત કરીને કમાલપાશાએ એને સિદ્ધ કર્યું હતું. એમના આ પગલાનું દુનિયાભરના મુસલમાનોએ સ્વાગત કર્યું અને કમાલપાસાના આ પગલાને કારણે તેઓ સામ્રાજ્યવાદ સામે લડવાવાળા તરુણ મુસલમાનોમાં પ્રશંસાપાત્ર બની ગયા. કમાલપાશાના નેતૃત્ત્વમાં તુર્કીના ઈનકલાબના સૌ પહેલા પ્રશંસકોમાં મૌ. અબુલકલામ આઝાદ પણ હતા. એક તો ખિલાફતનું આંદોલન પોતે એક પ્રતિક્રિયાવાદી હતું, બીજું એમાં પડવાથી ગાંધીજીને કટ્ટર રૂઢીવાદી મૌલાનાઓ અને મોલવિઓને સાથ આપવો પડ્યો. આમ તેઓ અજાણતામાં જ ભારતના મુસલમાનોમાં બુદ્ધિમાન, નવી રોશનીના ઉદાર નેતૃત્ત્વના ઉદયમાં બાધક અને કટ્ટર મુલ્લાશાહીના ખોળામાં ધકેલવામાં સહાયક સિદ્ધ થયા. મૌલાના મહમ્મદઅલીના એ વખતના ભાષણ, આજે બુદ્ધિ વિરુદ્ધ અને આધુનિક ધર્મનિરપેક્ષ રાજ્યની વિરુદ્ધના જણાય છે. જ્યાં કૉંગ્રેસના આંદોલનથી હિન્દૂઓમાં ધાર્મિક સુધારા થયા અને ઉદારતાનો પવન વાયો ત્યાં ખિલાફતને મદદ કરીને મુસલમાનોમાં કઠમુલ્લાપણું, કટ્ટરતા અને ધર્માંધતાને પ્રોત્સાહન મળ્યું. ઝીણા જેવા બુદ્ધિવાદી મુસલમાનો આનાથી વિરક્ત થયા. કૉંગ્રેસ અને મુસ્લિમ લીગમાં વિરોધના મૂળમાં આજ વાત હતી. વીતી ગયેલી વાતો પર વિચાર કરવાથી બીજી એક ભૂલનો સ્વીકાર કરવો પડશે. પં. જવાહરલાલ નહેરુ અને નૌજવાન કૉંગ્રેસીજન (જેમાં આ પંક્તિઓના લંખક —અચ્યુત પટવર્ધન- અને એમના સમાજવાદી સાથીઓ પણ હતા) એમ માનતા હતા કે પ્રદેશ અને સંપ્રદાયના ઝગડા અસલ અને બુદ્ધિવાદી વર્ગ-સંઘર્ષની સામે દબાઈ જશે. અમારી પેઢી માકર્સ અને લેનિનના નામની માળા જપતી હતી કે ઈતિહાસનો ક્રમ આથિક શકિતઓથી દોરાય છે, એટલે અમારું માનવું હતું કે મુસલિમ જનતાને દકિયાનુસી મુસલીમ લીગ અને ધર્માંધ મુલ્લાઓના પ્રભાવમાંથી બહાર કાઢવા જોઈએ. એટલે જવાહરલાલ નહેરુનો મુસલિમ જનસંપર્કનો કાર્યક્રમ બનાવવામાં આવ્યો, જેનો ઉદ્દેશ્ય હિન્દૂ અને મુસલિમ બધાં શોષિત અને ગરીબલોકોને આથિક શોષણ સામે લડવા માટે એક મંચ પર લાવવાનો હતો. મઝહબી ઝગડાઓને ભૂસવાનો સહુથી સારો ઉપાય અમને એ લાગ્યો કે જમીનદારી ઉન્મૂલન અને સમાજવાદી કાર્યક્રમને આગળ વધારવામાં આવેય પરન્તુ આ ઉપાય કારગર

સિદ્ધ ન થયો. આજે એ સ્વીકારવું પડે છે કે સંપ્રદાય, જાતિ, પ્રાન્ત અને ભાષાની ભાવના ખૂબ પ્રબળ અને દેશની એકતામાં બાધક છે.

આજ બે ખોટી નીતિઓ – સંપ્રદાયોના બદલે વર્ગ ભાવનાને વધારે મહત્ત્વ આપવા અને પુરાતન પંથી મુલ્લાઓનું સમર્થન કરવાના કારણે કૉંગ્રેસ, મુસલમાનોમાં પ્રગતિશીલ અને આધુનિકતાવાદી નેતૃત્ત્વના ઉદયમાં બાધક બની. એ સાચું છે કે આવા પ્રકારના લોકો મુસલમાનોમાં એટલા નથી જેટલા હિન્દૂ, પારસી અને ઈસાઈ સમાજોમાં. મુસલમાનોમાં પણ એવા લોકો છે, પરંતુ મજહબી જોશની સામે એમનું કંઈ ચાલતું નથી. અને મુસ્લિમ સમાજમાં આટલા વર્ષો પછી પણ બુદ્ધિવાદની કોઈ પ્રગતિ નથી થઈ શકી.

વાસ્તવમાં ઈસ્લામનો પ્રવેશ ભારતમાં એક જ માર્ગેથી નથી થયો. જુદા જુદા સમય એને સ્થળે, અનેક રૂપમાં, અનેક જાતિઓ અને ફિરકાઓ દ્વારા ભારતમાં ઈસ્લામનો પ્રવેશ થયો. ઈસ્લામને ભારતમાં લાવવા વાળા જુદી જુદી જાતિઓ અને વંશોના લોકો હતા અને પોતાની સાથે મુસલમાની મઝહબ ઉપરાંત તત્ત્વો પણ લાવ્યા હતા. ઈસ્લામમાં જેવી રીતે અનેક મત કે ફિરકાઓ બન્યા, એવી જ રીતે એમાં અનાક પ્રકારના રજવાડા અને રાજનીતિક પદ્ધતિઓ પણ જોવા મળે છે. એમ માનવું ભૂલ છે કે ભારતીય મુસલમાનોનો ઈસ્લામ એક જ પ્રકારનો છે. ભારતમાં આવેલી મુસલમાન જાતિઓના મઝહબ ઉપર એમની છાપ જોવા મળે છે. તુર્કીનો ઈસ્લામ, અરબ અને અફઘાની ઈસ્લામ કરતા જુદો છે. મુસલમાનો ઉપર એમની ચારે બાજુઓના સાંસ્કૃતિક પરિવેશની અસર પણ પડેલી છે. ફારસની સંસ્કૃતિની સાથે સાથે હિન્દૂ સંસ્કૃતિઓનો પણ ઈસ્લામ પર પ્રભાવ પાડ્યો છે. ભારતમાં ઈસ્લામ એવી માળા છે જેમાં મઝહબના દોરામાં જાતિ, સંસ્કૃતિ અને રાજનીતિના મોતી પરોવાયેલા છે. (પર્સીયલ સ્પીયર – દ પોજિશન ઑફ મુસ્લિમ બિફોર એન્ડ આફ્ટર દ પાર્ટિશન)

ઉપરોક્ત અવતરણમાં જે વાત સંક્ષેપમાં કહી છે એના અભ્યાસથી એક તારણ બીજું નીકળે છે કે હિન્દૂ, બૌદ્ધ, મુસ્લિમ, ઈસાઈ પ્રત્યેક ધર્મનો દેશ કાળ સાથે સંબંધ છે. સાથે જ એમાં એક શાશ્વત તત્ત્વ પણ હોય છે. પ્રત્યેક ધર્મમાં માનવ જીવનના રહસ્યોને સમજવાનો સાચો પ્રયત્ન જોવા મળે છે, એટલે જે કોઈ પણ મનુષ્ય જીવનના પ્રયોજનને સમજવા ઇચ્છતા હોય, એમના માટે આ ધર્મોમાં સામગ્રી છે. પ્રત્યેક ધર્મ પોતાની પૌરાણિક કથાઓના માધ્યમથી કેટલાંક શાશ્વત તત્ત્વોનું નિરૂપણ કરે છે. પ્રત્યેક ધર્મની પોત-પોતાની સમાજ વ્યવસ્થા હોય છે. આપણે પ્રત્યેક ધર્મના અસ્થાયી સામયિક તત્ત્વોમાંથી એના સ્થાયી તત્ત્વોને જુદા પાડવા જોઈએ. જેને આપણે આધુનિકતા કહીએ છીએ, એનું તત્ત્વ માત્ર એ છે કે મનુષ્યના બધાં જ પ્રયત્નોનું પ્રયોજન માનવની ભલાઈ છે. ધર્મનું પ્રયોજન માનવના ઉત્થાનનું છે, નહીં કે ધાર્મિક વિધિ વિધાનના નામે મનુષ્યની બલિ તદ્ધાવવાનું. આજ દૃષ્ટિથી એ જરૂરી છે કે આપણે મુસલમાનોને દકિયાનુસી રૂઢિઓનો ત્યાગ કરીને ઈસ્લામની સાચી ભાવના સમજવાની પ્રેરણા આપીએ. હિન્દૂઓના વિષયમાં પણ આજ વાત લાગુ પડે છે.

હિન્દૂ વિધિ અને મુસલમાનોની શરઅ બંને સમય કરતા પાછળ પડી ગયા છે અને આધુનિકતાની પ્રગતિમાં બાધક છે. વીસમી સદીના ઉત્તરાર્ધમાં સમાજની ધારણા બદલાઈ ગઈ છે. એના ઉપર સંયુક્ત રાષ્ટ્રોના માનવ અધકારની ઘોષણાઓનો પ્રભાવ છે. ભારતમાં એના પર આપણા સંવિધાનના મૌલિક અધિકારો અને માર્ગદર્શક સિદ્ધાંતોનો પણ મોટો પ્રભાવ પડ્યો છે. એમાં સ્ત્રિઓને સંપૂર્ણ સમાનતા આપવામાં આવી છે. આ ધર્મની સાચી ભાવનાને પૂરી રીતે અનુકૂળ પણ છે, કારણ કે એનો ઉદ્દેશ્ય, મનુષ્યતાની પ્રતિષ્ઠાનો છે. હિન્દૂ અને મુસલમાન બંનેએ મનુષ્યતાની આ ભાવનાનો આદર કરવો જ જોઈએ.

ભારતમાં એવા યુવકોની કમી નથી કે જેઓને પ્રેરણા આપીને જુની પેઢીના દકિયાનુસી વિચારોથી એમને દૂર લઈ જઈ શકાય, ઘણા વર્ષો પહેલા પ્રકાશિત કમ્યૂનલ ટ્રાય એન્ગલ નામના પુસ્તકમાં લેખકે (અચ્યુત પટવર્ધન) હિન્દૂ મુસ્લિમ સમસ્યા પર વિવેચન કર્યું હતું. તેઓ કહે છે કે હવે મારે સ્વીકાર કરવો પડે છે કે એમાં ભૂલ હતી. દેશ વિભાજનમાંથી દુઃખદ પાઠ મળ્યો છે.

મુસલમાનોની એક સ્વાભાવિક પ્રવૃત્તિ છે કે તેઓ પોતાની મુશ્કેલિઓ માટે હિન્દૂ સમ્પ્રદાયવાદિઓને દોષ આપે છે. પોતાની મુસીબતોનો દોષ બીજા પર નાખવો નબળાઈ છે. પુસ્તકમાં મુસલમાનોની આ પ્રવૃત્તિથી સાવચેત કરવામાં આવ્યા છે. મુસલમાનોના પછાતપણાની આ નિશાની છે કે એમણે ધર્મનિરપેક્ષતા અને સમાજવાદના આહવાહન પર ધ્યાન નથી આપ્યું. સ્વતંત્ર ભારતમાં એમની ઉન્નતિ ન થવાનું આજ સહુથી મોટું કારણ છે. જ્યાં સુધી મુસલમાન સામપ્રદાયિક સંગઠન અને આંદોલન પર ભરોસો રાખશે ત્યાં સુધી એમને નિરાશા જ મળશે. જ્યાં સુધી બીજાઓ સાથે મળીને એવા સમાજની રચનામાં યોગદાન નહીં આપે, જેમાં અનેકતા વચ્ચે એકતા રહે, તેઓ ઠોકર ખાતા રહેશે.

ટંકારા ગૌશાળામાં ગાયના પાલન-પોષણ માટે અપીલ

મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ ટંકારા ગૌશાળાનું પણ સંચાલન કરે છે. અનેક ગૌભક્તોએ ગાયો દાન માં આપી છે. ગાયોનું દૂધ માત્ર અને માત્ર બ્રહ્મચારિઓને જ આપવામાં આવે છે, એનું વેચાણ કરવામાં આવતું નથી. એક ગાય ઉપર અંદાજે વાર્ષિક ૭000.00 (સાત હજાર રૂપિયા) નો ખર્ચ આવે છે, જેમાં લીલો-સૂકો ચારો અને પૌષ્ટિક આહાર ઉપરાંત ગૌશાળાની જાળવણીના વ્યયનો સમાવેશ આવી જાય છે.

આપના ઘરના વિવિધ પ્રસંગોની ઉજવણીના ભાગ રૂપે ગાયોના પાલન-પોષણ માટે દાન આપનીને પુણ્ય કમાવાનો અવસર છે.

આપ શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ, ટંકારાના
સ્ટેટ બેન્ક ઑફ ઇન્ડીયાના ખાતા નં. FCI No. SBIN 0060085, AC/ NO. 56085002050
માં દાન જમા કરાવી શકો છો.

समाचार दर्पण

श्री मद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय

111 गौतमनगर, नई दिल्ली-110041 का

68वां वार्षिक समारोह एवं 36वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

दिनांक 27 नवम्बर सोमवार से 17 दिसम्बर 2017 रविवार तक

विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ सम्पन्न होगा।

प्रथम दिवस कार्यक्रम-प्रातः 8 बजे से 11.30 बजे तक

ब्रह्मा-डॉ. महावीर (पूर्व कुलपति, उ.स.वि.वि.), **ध्वजारोहण-आर्य कुल शिरोमणि कै. रूद्रसेन आर्य**

प्रवचन-श्री महेश विद्यालंकार

मुख्यअतिथि- श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्री दर्शनकुमार जी अग्निहोत्री,

श्री ला. मोहनलाल चोपड़ा (एवरग्रीन स्वीट्स)

सानिध्य-श्री कृष्ण मुनि वानप्रस्थ, श्री रविदेव गुप्त, श्री संतोष कुमार मित्तल

आर्य सम्मेलन-09.12.2017, प्रातः 10 बजे से 1.00 बजे तक

(दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में)

आर्य महिला सम्मेलन-12.12.2017, दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक

(प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में)

पूर्णाहुति-17.12.2017, प्रातः 8 बजे से 1.30 बजे तक

अध्यक्षता-डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक एमिटि शिक्षण संस्थान एवम् ए.के.सी. ग्रुप)

मुख्यअतिथि-ला. दीनदयाल गुप्त जी, श्री प्रभात शेखर, ठाकुर विक्रम सिंह,

डॉ. सत्यपाल सिंह (शिक्षा राज्य मन्त्री), **डॉ. आनन्द कुमार, श्री आनन्द चौहान, श्री सत्यानन्द आर्य**

निवेदक-

माता परमेश्वरी देवी (कुलमाता), **डॉ. अशोक कुमार चौहान** (कुलपति), **श्री चौ. मामचन्द तंवर** (प्रधान), **श्री कै. रूद्रसेन आर्य** (मन्त्री), **श्री चौ. सुखवीर सिंह** (उप-प्रधान), **श्री रामनाथ सहगल** (महाप्रबन्धक), **श्री संजय सिक्का** (न्यासी), **श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री** (न्यासी), **श्री गुरुदत्त तिवारी** (न्यासी), **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती** (आचार्य)

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में

वीरांगनाओं, शिक्षिकाओं एवं कार्यकर्त्ता बहिनों का राष्ट्रीय सम्मेलन

हमें यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि वीरांगना दल को राष्ट्रव्यापी एवं सुदृढ़ बनाने हेतु, देश के विभिन्न प्रांतो में कार्यरत संगठित वीरांगना दलों के परस्पर परिचय हेतु इस सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

शनिवार, 23 दिसम्बर व रविवार, 24 दिसम्बर 2017

स्थान - आर्य समाज 'बी' ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली

कृपया अपने आने की सूचना व बहिनों की संख्या 16 दिसम्बर तक अवश्य दे दें ताकि आपके रहने की व्यवस्था ठीक प्रकार से हो सके। 16 दिसम्बर तक अपना पंजीकरण अवश्य करा लें।

साध्वी डॉ. उत्तमायति	**मृदुला चौहान**	**आरती खुराना**	**विमला मलिक**
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्ष
मो.9672286863	मो. 09810702760	मो. 09910234595	मो. 07289915010

जीवन निर्वाण शिविर सम्पन्न

ओड़िशा प्रदेश के सर्वप्रथम आर्यसमाजी, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का ओड़िया भाषा के आद्य अनुवादक श्री वत्स पण्डा जी का 148वां जयन्ती महोत्सव करूणा वरूणालय प्रभु की कृपा से 01.10.2017 को तनरडा गोरक्षा आश्रम के मन्त्री आर्यजगत् के युवा वैदिक विद्वान, गुरुकुल हरिपुर के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी के कुशल संयोजकत्व में एवम् आश्रम के समस्त पदाधिकारियों एवम् कार्यकर्ताओं के प्रबल पुरुषार्थ से निर्विघन्न सम्पन्न हुआ। जयन्ती समारोह कार्यक्रम में गुरुकुल वेदव्यास राऊरकेला के अधिष्ठाता डॉ. देवव्रत आचार्य जी, इं. प्रियव्रत दास, माता शन्नोदेवी जी आदि तथा ओड़िशा के विभिन्न आर्यसमाजों से शताधिक आर्यमहानुभाव उपस्थित थे।

पारायण महायज्ञ एवम् वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल हरिपुर का अष्टम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव आगामी 27, 28, 29 जनवरी 2018 शनि, रवि, सोमवार को अनेक विलक्षण अद्‌भुत कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। आप सपरिवार इस पुण्य अवसर पर सम्मिलिति होकर मन की शुद्धि करें और आत्म सन्तुष्टि को प्राप्त करें।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर, चौक आर्य समाज, पटियाला द्वारा दिनांक 6 नवम्बर से 12 नवम्बर 2017 बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ वेद प्रचार सप्ताह एवम् ऋग्वेद पारायण महायज्ञ मनाया गया। इस पूरे समारोह में पटियाला और आस के कस्बों के आर्य भाई बहनों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

ऋषि निर्वाण समारोह आयोजित

मानसरोवर हाऊसिंग बोर्ड की कॉलोनी के ओमानन्दम परिसर में आर्य समाज समन्वय समिति तथा **आर्य समाज जयपुर (दक्षिण)** के संयुक्त तत्त्वावधान में समारोह आयोजित हुआ। महान् वेदोद्धारक स्वामी दयानन्द सरस्वती के 134वें बलिदान दिवस पर उनका कृतित्त्व उजागर किया गया। समन्वय समिति-संयोजक यशपाल यश ने ऋषि को समग्र क्रान्ति का अग्रदूत यशपाल यश में आयोजित नव सस्येष्टि-यज्ञ में विशेष आहुतियां प्रदान की गई। यज्ञ का संचालन उत्साही ऋषि भक्त सुनील अरोड़ा द्वारा हुआ। भजनों के माध्यम से ऋषि-कृतित्त्व गाथा महिला व पुरुष सदस्यों ने प्रस्तुत की। विशेष उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृत एवं वेदों पर शोध करने आए जर्मन नागरिक जॉन्स ने यज्ञ प्रक्रिया में विशेष रूचि ली जिसका अंग्रेजी में अनुवाद यशपाल यश ने समझाया। सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि एवं स्कूली छात्रों की अच्छी उपस्थित रही।

कुलपति दिवंगत

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी ओड़िशा के कुलपति, सेवावीर, दानवीर महात्मा वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य कोलकाता, सुजानगढ़, पिछले तीन साल से अस्वस्थ चल रहे थे उनका देहावसान 92 वर्ष की आयु में 6 अक्टूबर 2017 को सायंकाल 6 बजे रायपुर में हो गया, वे पिछले 35 वर्षो से उन्होंने अपना सारा समय समाज सेवा व जन कल्याण के लिए अर्पित किया था।

विश्व वेद सम्मेलन

आपको यह जानकर अतिप्रसन्नता होगी कि **विश्व वेद सम्मेलन का आयोजन** दिनांक 15, 16 व 17 दिसम्बर 2017 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र 1, जनपथ, इंडिया गेट के पास, नई दिल्ली में किया जा रहा है। इस सम्मेलन में भारत व विश्व के अन्य देशों से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनेक वैदिक विद्वान भाग लेंगे व विश्व के समक्ष विद्यमान वर्तमान चुनौतियों-जैसे गरीबी, बीमारी, अशिक्षा, जलवायु परिवर्तन, मानव अधिकारों की रक्षा आदि के संदर्भ में वेदों की प्रासंगिकता के विषय में विचार विमर्श कर एक वैदिक घोषणा पत्र जारी करेंगे।

वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) का 106 वार्षिकोत्सव दिनांक 8, 9 एवम् 10 दिसम्बर 2017 को भव्यतापूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस भव्य समारोह में आप सभी गुरुकुल हितैषी धर्म प्रेमी सज्जन इष्ट मित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। सम्पर्क सूत्र-मो. 9907056726, 9424471288

वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल का '53वां वार्षिक महोत्सव' कार्तिक शुक्ला द्वादशी से पूर्णिमा तद्नुसार बुधवार, 1 नवम्बर 2017 से शनिवार, 4 नवम्बर 2017 तक बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। महोत्सव में अनेक विद्वानों, महात्माओं, भजनोपदेशकों, केन्द्रीय एवं प्रान्तीय नेताओं तथा गणमान्य अधिकारियों को आमन्त्रित किया गया है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर कोटरा का तृतीय वार्षिकोत्सव श्रीमान आर्य महामुनि जी सोरो की अध्यक्षता में आर्यविश्व मुनि जी बदायूँ एवं विधायक श्री देवेन्द्रसिंह जी कासगंज तथा ब्लॉक प्रमुख श्री अविनाश सिंह कासगंज तथा डिप्टी कमिश्नर (वाणिज्य) श्री अशोक कुमार आगरा के विशिष्ट अतिथ्य में दिनांक 20.10.2017 को आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जो वेदों का प्रचार-प्रसार करती है उन्होंने कहां कि जो शांत, सहनशील, दयालू और नम्र होते उसे ही आर्य कहते है। श्रीमती पुष्पा आर्य ने बच्चों की शिक्षा, रूढ़ि वादिता व अंधविश्वास पर अपने विचार रखते हुए माता-पिता सास-ससुर की सेवा करने पर जोर दिया।

- जो मनुष्य धर्म से अर्थात ईमानदारी से धन कमाता है। उस धन को अपना धन माने किन्तु अन्याय से अर्थात् झूठ बोलकर धोखा देकर, मिलावट करके, कम तोलकर रिश्वत लेकर, रिश्वत देकर अपनों को धोखा देकर धन कमाता है। उसको अपना धन नहीं मानें। अन्याय से कमाया हुआ धन तो मनुष्य को पापी बनाएगा ही और दुख भी देगा।
- मनुष्यों परमात्मा मित्र के समान सब सुख देने वाला, संसार को उत्पन्न करने वाला और पालन करने वाला है। सत्य का उपदेश देने वाला है।
- सभी अच्छे बुरे कर्मो को देखने वाला, सर्व व्यापक अंतर्यामी और न्यायाधीश है इसलिए उस परमात्मा की उपासना करो। उसकी उपासना से ही सुख प्राप्त होगा।

- स्वामी दयानन्द

टंकारा यात्रा 2018

सैरकर दुनियाँ की नादान जिन्दगानी फिर कहाँ। जिन्दगानी भी रही तो नौजवानी फिर कहाँ।।

।। यात्री बनकर आयें-मित्र बनकर जाएं ।।

आर्यों का तीर्थ स्थल टंकारा चलो।

टंकारा, पोरबंदर, सोमनाथ, द्वारकापुरीधाम, द्वीव, अहमदाबाद

टंकारा यात्रा अवधि 9 दिन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं उप-कार्यालय आर्य समाज अनारकली मंदिर मार्ग एवं श्री रामनाथ सहगल जी के प्रेरणा से धर्म प्रेमी बहनों व भाइयों के लिए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा यात्रा एवं द्वारकापुरी धाम तीर्थ यात्रा का सुनहरी अवसर। 07.02.2018 को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से राजधानी द्वारा चलेंगे व 15.02.2018 को वापस दिल्ली यात्रा समाप्त होगी। इस यात्रा में जाने के लिए यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी सीट यथाशीघ्र बुक करवा लें, जिससे कि रेलवे में कन्फर्म बुकिंग मिल सके। इस यात्रा में बस-रेल व आने-जाने का सभी खर्च शामिल है।

कार्यक्रम व दर्शनीय स्थल : ❑ 07.02.2018 नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से राजधानी द्वारा अहमदाबाद के लिए प्रस्थान। ❑ 08.02.2018 भारत के चार पवित्र नगरों में से एक गोमती गंगा, नागेश्वर, द्वारकाधीश मन्दिर ❑ 09.02.2018 श्रीकृष्ण महल व भेंट द्वारका, गोपी तालाब ❑ 10.02.2018 द्वारका से पोरबन्दर गांधीजी का जन्म स्थान, तारा मंडल, आर्य गुरुकुल, भारत माता मन्दिर ❑ 11.02.2018 सोमनाथ का लाईट एण्ड साउंड शो, जहां श्री कृष्ण जी को तीर लगा था व द्वीव का समुद्री किनारा व सनसैट। ❑ 12.02.2018 प्रात: टंकारा के लिए प्रस्थान शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। ❑ 13.02.2018 शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। ❑ 14.02.2018 प्रात: नाश्ते या लंच के पश्चात अहमदाबाद का अक्षरधाम मन्दिर एवं लाईट एण्ड साउंट शो। ❑ 15.02.2018 नई दिल्ली स्टेशन के लिए समाप्त।

नोटः- इन सभी स्थानों पर रहने व खाने की व्यवस्था होटल में होगी और टंकारा में रहने व खाने की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क है अगर किसी व्यक्ति के पास रेलवे का पास है तो वह 14000/- रूपये देकर जा सकता है।

यात्री किराया-राजधानी 3 ए.सी. 18500/-, राजधानी 2 ए.सी. 20400/-, ❐ सीनियर सिटिजन- राजधानी 3 ए.सी. 17600/-, राजधानी 2 ए.सी. 19000/-, ❐ महिला सीनियर सिटीजन- राजधानी 3 ए.सी. 17200/-, राजधानी 2 ए.सी. 18600/-। By Air Delhi to Ahmedabad 22700/- जब तक टिकतें मिलती रहेंगी। (आगे यात्रा बस द्वारा होगी)

यात्रा नियम : ❐ कहीं पर किसी मन्दिर, किले व नौकारोहण के समय कोई टिकट लेना होगा तो वे यात्री स्वयं लेंगे। ❐ कार्यक्रम में समय के अनुसार परिवर्तन करने का अधिकार, संयोजक का होगा। ❐ हमारी यात्रा में अकेली महिला व वृद्ध महिलाऐं भी यात्रा कर सकती हैं क्योंकि हमारी यात्रा का माहौल घर परिवार जैसा होता है। ❐ सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपना चैक या ड्रफ्ट ARYA TRAVEL अथवा विजय सचदेव के नाम कोरियर या पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं। ❐ इन यात्राओं में प्रत्येक कमरे में दो व्यक्ति ठहरेगें। इस यात्रा में रहने व खानें की व्यवस्था Hotel, Tourist, Class, Non Star, Neat & Clean होगी। इस यात्रा में खाना शाकाहारी होगा। ❐ इस यात्रा में रेलवे की बुकिंग कम्पयूटर द्वारा जो सीट नम्बर मिलेगा वही आपका सीट नम्बर होगा। ❐ कृपया सभी सीनियर सिटीजन यात्री अपना आयु का प्रमाण पत्र साथ रखें। ❐ इस यात्रा में दोपहर का भोजन कभी-कभी सम्भव नहीं हो पाता उस समय के लिए यात्री अपनी पसन्द की खाने-पीने की मन पसन्द वस्तुएं अपने पास रखें। ❐ सीट बुक कराने के लिए ए.सी. के यात्री 8000/- रूपये व हवाई जहाज के यात्री 12000/- अग्रिम राशि के रूप में जमा करवा दें। इस यात्रा में एक बार टिकट बन जाने पर अगर यात्री टिकट रद्द करवाता है तो 4000/- रूपये व हवाई जहाज के यात्री 8000/- रूपये प्रति व्यक्ति कटवाने होंगे जाने से दो दिन पहले रद्द करवाने पर 70 प्रतिशत व्यक्ति कटवाने होंगे। क्योंकि होटल व बस बुक हो चुकी होती है।

आर्य ट्रैवल

अमित सचदेवा (मो. 9868095401, 9350064830), **विजय सचदेवा (सुपुत्र स्व. श्री श्यामदास सचदेवा)**

2613/9, चूना मंडी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, फोन : 011-45112521, मो. 09811171166

(पृष्ठ 1 का शेष)

वर्तमान समय में वृक्षों के अंधाधुंध काटने तथा उनके स्थान पर अन्य वृक्षारोपण न करने से पर्यावरण प्रदूषण का संकट छाया हुआ है। सार्वजनिक मार्गो पर छायादार वृक्षारोपण करना भी दान का ही महान अंग है। इसलिए अधिक से अधिक छायादार वृक्ष रोपित करना भी दान है। शास्त्रानुसार 'दान' एक 'महान सत्कर्म' है। तो आइए, हम सब भी इसमें सम्मिलित हों और इसी प्रकार मिल कर कुछ न कुछ दान की भावना जाग्रत करें और समाज, राष्ट्र और विश्व का भुला कर अपना और अपने परिवार एवम् पूर्वजों का लोक और परलोक सुधारने का मार्ग प्रशस्त करें।

पिवन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः, स्वयं नाखादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति शस्यं खलुवारिवाहाः परोपकाराय सतां विभूतये॥

अर्थात् नदी अपना जल स्वयं नहीं पीती है, ''वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते हैं।'' बादल अपना जल अपने लिए नहीं लाते है, परोपकारियों का जीवन दूसरों के लिए ही समर्पित होता है।

– 113, बाजार कोट, अमरोहा–244221, मो. 9927064104

गौ–दान : महा–दान

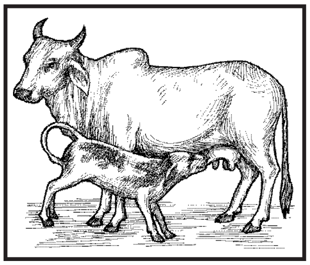

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/–** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/– रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

–: निवेदक :–

शिवराजवती आर्या (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी **बोधोत्सव 12, 13, 14 फरवरी 2018** को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 01 जनवरी 2018 तक भिजवाकर कृतार्थ करे। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पुष्ठों से अधिक न हो तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल **tankarasamachar@gmail.com** पर ''वॉकमेन चाणक्य'' टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय, सम्पादक टंकारा समाचार, चलभाष 9810035658

सम्पादकीय कार्यालय: ए-419, ओ३म् ध्वज सदन, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

टंकारा समाचार

के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

दिनांक 12, 13, 14 फरवरी 2018 को आयोजित ऋषि बोधोत्सव हेतु दिल्ली से राजकोट जाने वाली गाड़ियां का विवरण

(1) देहरादून ओखा उत्तरांचल एक्स., ट्रेन न. 19266 नई दिल्ली से राजकोट दोपहर, 1.10 बजे रविवार दिनांक 04.02.2018 **(2) सर्वोदय एक्सप्रेस, ट्रेन नं. 12478,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.25 बजे रविवार दिनांक 04.02.2018 **(3) हापा एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12476,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.25 बजे सोमवार दिनांक 05.02.2018 **(4) सराय रोहिल्ला पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19264,** सराय रोहिल्ला से राजकोट प्रातः 8.20 बजे सोमवार दिनांक 05.02.2018 **(5) पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19270,** पुरानी दिल्ली से राजकोट दोपहर 12-55 बजे मंगलवार दिनांक 06.02.2018 **(6) पोरबन्दर एक्सप्रैस ट्रेन न. 19264** प्रातः 8.20 वीरवार दिनांक 08.02.2018 सराय रोहिला से राजकोट **(7) सराय रोहिला राजकोट एक्सप्रैस ट्रेन न. 19580,** दोपहर 1.10 बजे दिनांक 09.02.2018 सराय रोहिला से राजकोट। **(8) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12916,** पुरानी दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन 3.00 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा **(9) राजधानी एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12958,** नई दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन सायं 7.35 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा।

राजकोट से दिल्ली जाने वाली गाड़ियाँ: (1) हापा एक्सप्रैस, ट्रैन न. 12475, राजकोट से नई दिल्ली बुधवार दिनांक 14.02.2018 सुबह 6.50 बजे। **(2) राजकोट सराय रोहिला एक्सप्रैस, ट्रैन न. 19579,** राजकोट से सराय रोहिला वीरवार दिनांक 15.02.2018 दोपहर 12.15 बजे। **(3) मोतिहारी एक्सप्रैस, ट्रैन न. 19269,** राजकोट से पुरानी दिल्ली वीरवार दिनांक 15.02.2018 सायं 7:32 बजे। **(4) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12915,** अहमदाबाद से पुरानी दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.45 बजे, अहमदाबाद तक बस द्वारा। **(5) राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन न. 12957,** अहमदाबाद से नई दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.25 बजे अहमदाबाद तक बस द्वारा।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल जीन्द हरियाणा

पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का प्रकाशोत्सव सम्पन्न

चित्रमय झलकियां

(पृष्ठ 2 का शेष)

इसी सत्र में यज्ञ के उपरान्त विद्यालय के विभिन्न छात्र-छात्राओं ने वैदिक मान्याताओं से ओत-प्रोत संस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इसी कार्यक्रम में बालिकाओं द्वारा डी.ए.वी. में हो रहे कार्यो एवम् महात्मा आनन्द स्वामी जी के जीवन चरित्र की कुछ झाकियों का रूपान्तरण नाट्य शैली में प्रस्तुत किया जोकि बहुत भावपूर्ण था।

श्री हरि सिंह सैनी ने मान्य प्रधान जी का स्वागत करते हुए उनके नेतृत्व में आर्य समाज और डी.ए.वी. संस्थाओं की कार्यप्रणाली में आई पवित्रता, समर्पण, दक्षता और उपलब्धियों का बखान करते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् डी.ए.वी. के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा अभिव्यक्त की। इसका प्रमाण देते हुए उन्होंने मंच से आर्य समाज नागौरी गेट और इसके अधीन चल रही शिक्षण संस्थाओं को पूर्णतया आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबन्धन के अधीन करने का संकल्प दोहराया। वे उस समय अत्यन्त भावुक हो गए जब उन्होंने कहा इस समाज के साथ चल रही पाँच संस्थाओं को मिला कर अब डी.ए.वी. 914 नहीं 919 संस्थाओं वाला देश का सबसे बड़ा संगठन बन गया है।

> वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता, तीसरा आचार्य होवें तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। – सत्यार्थ प्रकाश

> मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़कर असत्य में झुक जाता है। – सत्यार्थ प्रकाश

मेरी हैसियत से ज्यादा मेरे थाली में तूने परोसा है,
तु लाख मुश्किलें भी दे दे,
ईश्वर, मुझे तुझपे भरोसा है।

टंकारा समाचार दिसम्बर 2017
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-12-2017
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.11.2017

॥ ओ३म् ॥

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) दूरभाष: (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष बोधोत्सव का आयोजन 12, 13, 14 फरवरी 2018 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ: 07 फरवरी से 13 फरवरी 2018 तक

ब्रह्मा: आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत: श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) श्री दिनेश पथिक (अमृतसर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष:

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)

बोधोत्सव

दिनांक 13.02.2018

मुख्य अतिथि: महामहिम आचार्य देवव्रत जी, (राज्यपाल हिमाचल प्रदेश के आने की सम्भावना)

विशिष्ट अतिथि: श्री जे.पी. शूर, निदेशक स्कूल्स् डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति

कार्यक्रम के सम्भावित आमन्त्रित-श्री चैतन्य मुनि (हिमाचल प्रदेश), **स्वामी आर्येशानन्द** (माउन्ट आबू), **स्वामी शान्तानन्द** (गुजरात) **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात), **वैदिक विद्वान डॉ. रूप किशोर शास्त्री,** (वेद विभागाध्यक्ष गुरुकुल कागड़ी), **श्री एस.के. शर्मा** (डी.ए.वी. पब्लिकेशन एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए.), **श्री वाचोनिधी आर्य** (गांधीधाम) एवं इसके अतिरिक्त देश विदेश से अनेकों विद्वान् एवं सन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यो के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0466500** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।**

निवेदक

शिवराजवती आर्या, उपप्रधाना

रामनाथ सहगल, मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय